



सत्यमेव जयते

# सविता

हिंदी गृह पत्रिका  
अक्टूबर 2021- मार्च 2022



लोकयन् लखनीया  
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं  
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय  
केरल, तिरुवनन्तपुरम



सत्यमेव जयते



# सविता

हिंदी गृह पत्रिका  
अक्टूबर 2021- मार्च 2022



# सविता

हिंदी गृह पत्रिका  
अक्टूबर 2021- मार्च 2022

## पत्रिका परिवार

### मुख्य संरक्षक

श्रीमती अनिम चेरियान  
प्रधान महालेखाकार  
(लेखापरीक्षा I)

### संरक्षक

श्री को.प.आनंद  
प्रधान महालेखाकार  
(लेखापरीक्षा II)

## संपादक मण्डल

### परामर्शदात्री

श्रीमती अनु जोस  
वरिष्ठ उप महालेखाकार  
(प्रशासन एवं एमजी I)

### मुख्य संपादक

डॉ अनीष डी  
वरिष्ठ उप महालेखाकार  
(प्रशासन)

## सदस्य

### श्रीमती लक्ष्मी एस

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका  
हिंदी अधिकारी

श्रीमती राधिका टी वी  
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री अनिता दास  
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा  
हिंदी अधिकारी

श्रीमती बबिता  
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री सादत हुसैन रिजवी  
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

# संदेश



हमारी कार्यालयीन अर्ध वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “सविता” का नवीनतम अंक आप सुधी पाठकों के समक्ष सादर प्रस्तुत है। हमारा देश स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर है, केंद्र सरकारी कामकाज की भाषा हमारी अपनी राजभाषा हिंदी की वृद्धि करना केंद्र सरकारी कर्मी होने के नाते विशेषकर हमारा दायित्व बन जाता है। हमारी पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार - प्रसार में सराहनीय भूमिका का निर्वहन कर रही है। पत्रिका का नियमित प्रकाशन और कार्यालय के कर्मियों द्वारा उनकी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका के हर अंक को एक नया स्वरूप दिया जाना, इस कार्यालय में राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन सहित यहाँ के कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव और निष्ठा का परिचायक है। यह कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों की सृजनशीलता की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ उन्हें हिंदी में लेखन कौशल का अवसर प्रदान करती है। खासतौर से हिंदीतर भाषी कर्मियों द्वारा हिन्दी आलेख देना इस पत्रिका की सम्पूर्णता में चार चाँद लगा देता है।

पत्रिका के सफल संपादन के लिए समस्त संपादक मंडल तथा इसमें योगदान देने वाले सभी रचनाकारों की मेहनत काबिले तारीफ़ है। राजभाषा से जुड़ी इस पहल को सार्थक बनाने के लिए मैं आप सभी को शुक्रिया अदा करना चाहती हूं। आप भविष्य में भी इसी तरह इस पत्रिका का सफल संपादन व प्रकाशन करते रहें और राजभाषा की समृद्धि में योगदान देते रहें, शुभकामनाओं के साथ...

जय हिंद। जय हिंदी ॥

अनिम चेरियान

अनिम चेरियान  
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

# संदेश



यह अत्यंत गर्व और आनंद का विषय है कि स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के अवसर पर हमारी कार्यालयीन गृह पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस विशेष अवसर पर देश की संपर्क भाषा के रूप में भारत के अधिक से अधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जाने वाली हिंदी भाषा का अधिक महत्व है। भाषा एक राष्ट्र की पहचान है और राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन पत्रिकाओं की भूमिका प्रशंसनीय है। हमारी गृह पत्रिका के प्रकाशन में कार्यालय के हिंदी एवं हिंदीतर भाषी पदाधिकारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्वावना ही राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन का मूल मंत्र है। इसके लिए संपादक मण्डल को बधाइयां। कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति अच्छा मनोभाव बनाए रखने के लिए सभी पदाधिकारी गण और अपनी रचनात्मकता से पत्रिका को उभारने हेतु सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। कामना है कि हमारी गृह-पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रगति पथ पर अग्रणी रहे।

पत्रिका की सफलता के लिए मंगलकामनाएं।

कौ.प.आनंद  
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा ॥ )

# संदेश



नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ हिंदी गृह पत्रिका 'सविता' का नवीनतम अंक आप सब को भेंट करती हूँ।

भारत भौगोलिक आधार पर ही भिन्न नहीं है बल्कि इसका भाषाई और सांस्कृतिक स्वरूप भी भिन्न है। दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं है जो भारत की भाषाई विविधता की बराबरी कर सकता है। हिंदी भाषा विभिन्न देशी या विदेशी भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभाती है।

राजभाषा की परिकल्पना तभी सार्थक रूप से सिद्ध हो सकती है जब कार्यालयों में इसका प्रयोग प्रचलित हो। इस में विभागीय पत्रिकाओं की बड़ी भूमिका है। विभागीय पत्रिकाएं कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा संवारने और भाषाई कौशल को विकसित करने का मंच प्रदान करती है। पत्रिका में समाहित रचनाओं को देखकर मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि हमारे कार्यालय के कर्मचारीगण अपनी कार्यालयीन पत्रिका 'सविता' का पूरा लाभ उठा रहे हैं और अपनी रचनात्मक कुशलता के साथ अपनी भाषा प्रवीणता भी चमका रहे हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मियों को अभिनंदन। मेरी मंगल कामना है कि 'सविता' इसी प्रकार विजय पथ पर अग्रसर होती रहे।

*Anu Joshi*

अनु जोसि  
वरिष्ठ उप महालेखाकार  
(प्रशासन एवं लेप प्र स-1)

# मुख्य संपादक की कलम से...



हमारी कार्यालयीन अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “सविता” का एक और अंक आपके समक्ष सादर प्रस्तुत है। 14 सितम्बर 1949, हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलने के ऐतिहासिक दिन से आज तक हिंदी के चहुंओर उपयोग और विकास ने यह साबित किया है कि हमने हिंदी भाषा के गतिमान पहिए को और रफ़तार दी है इसका बेहतरीन उदाहरण है हमारी कार्यालयीन पत्रिकाएं जो देश के हरेक कार्यालय से लगातार प्रकाशित होती आ रही हैं। इस दिशा में हमारी पत्रिका भी योगदान देते आ रही हैं। यह हमारे लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है।

पहले ये माना जाता था कि विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्रों में हिंदी में पढ़ाई करना नामुमकिन है, लेकिन बदलते परिवृश्य में तकनीकी विषयों की पढ़ाई भी हिंदी में शुरू होना इस बात का प्रमाण है कि हिंदी किसी भी अन्य भाषा से कम नहीं है। हर क्षेत्र की तरह राजभाषा के क्षेत्र में भी तकनीकी का विकास की झलक हम देख सकते हैं। हमारी पत्रिका पिछले कुछ अंकों से ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाता है। निश्चित अंतराल में प्रकाशित पत्रिका राजभाषा के प्रति हमारे लगाव का निर्दर्शन है।

यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि ईश्वर का अपना देश केरल की सांस्कृतिक झलक के साथ प्रस्तुत विभिन्न आलेख, कविताएं, पेटिंग, कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र, लेखापरीक्षा कार्य में सहायक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री पाठकों को रूचिकर लगेगी।

मुझे पूरी आशा है कि पत्रिका का यह अंक आप सभी को पठनीय लगेगा। आपके सुझाव हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। अपनी प्रतिक्रियाएं एवं सुझाव कृपया [hindicell.ker1.au@cag.gov.in](mailto:hindicell.ker1.au@cag.gov.in) पर व्यक्त करें।

जय हिंद। जय हिंदी ॥

અનીષ ડી  
ડॉ અનીષ ડી  
વરिष्ठ ઉપ મહાલેખાકાર (પ્રશાસન)

# एक सफर

जिंदगी एक सफर है  
जिसकी मंजिल का कोई पता नहीं  
पीछे मुड़कर जाना भी मुश्किल  
बस चलते रहना है आगे  
जिंदगी के सफर में  
हर पल होता हैं अनमोल  
उसकी कीमत जानकर जीना  
फिर क्या फायदा पछताने का  
जिंदगी के सफर में  
मुश्किलों का करना है सामना  
तूफानों से डरकर नहीं भागना  
हिम्मत से आगे बढ़ते हैं जाना  
जिंदगी के सफर में  
मिलते हैं अनेक हमसफर  
उनको प्यार से है संभालना  
टूटे रिश्तों को जोड़ना बड़ा है कठिन  
जिंदगी के सफर में  
हार-जीत दोनों हैं  
डरकर गिरा तो भी क्या  
दोबारा उठकर दौड़ना है आगे



श्रीमती उषा बर्टी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी





अंजुम जेहरा  
आहार विशेषज्ञा  
पनी सादत हुसैन रिज़वी, क.हि.अनु.

## नज़रअंदाज़ न करें कोलेस्ट्रॉल

हम अपनी ज़िंदगी में इतने व्यस्त हैं कि जिस शरीर के बलबूते जीवन के मँझे ले रहे हैं उस पर ध्यान देने की फुरसत ही नहीं है। लेकिन वो कहते हैं न कि अपनी दौलत और सेहत पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि गरीबी और बीमारी आने में वक्त नहीं लगता।

भागदौड़ भरी ज़िंदगी में हम अपने खान-पान का ध्यान नहीं रख पाते हैं खासतौर से नौकरीपेश लोगों का खानपान सही नहीं हो पाता है और असंतुलित भोजन जो पौष्टिक नहीं तो शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता, इस तरह से वो अपने शरीर में कई बीमारियों को दावत देते हैं- जैसे-हार्ट अटैक, स्ट्रोक, किडनी स्टोन, डायबिटीज़ आदि।

अपने खान-पान पर ध्यान देकर हम लम्बे समय तक जीवन का आनंद ले सकते हैं, सोचिए वो ज़िंदगी कितनी बुरी है जिसमें खाने के पहले या खाने के बाद दवाई लेनी पड़े इन सबसे बचने का उपाय है जंक फूड या बाहर का भोजन न कर के घर का भोजन करें, जिसमें यह ध्यान रखा जाए कि लिया जाने वाला भोजन पौष्टिक तत्वों से युक्त हो, खाना खाते समय अपने मूँड को हल्का बनाए रखें और खाना खुशी से अपने ससुराल वालों की तारीफ करते हुए खाएं।

कोलेस्ट्रॉल की समस्या किसी भी उम्र के व्यक्ति को हो सकती है, और इसका सबसे बड़ा कारण है अधिक मात्रा में संतुप्त वृसा यानि सैचुरेटेड फेट, ट्रांस फेट या अधिक कोलेस्ट्रॉल युक्त खानपान। जैसे दूध अंडा, मक्खन, रेड मीट, पनीर, तले हुए खाद्य पदार्थ, बिस्किट, चिप्स आदि में कोलेस्ट्रॉल अधिक मात्रा में होता है। व्यक्ति का वज़न भी कोलेस्ट्रॉल बढ़ाने में कारक बनता है यदि व्यक्ति का वज़न ज़्यादा है तो उसके शरीर में चर्बी जमा होगी, जो कोलेस्ट्रॉल, टी जी(ट्राईग्लिसाइड) इत्यादि तो

बढ़ाएगी ही साथ ही नए रोग जैसे हार्टअटैक, उच्च रक्तचाप, आर्थराइटिस जैसी समस्याएं भी पैदा करेगी।

कोलेस्ट्रॉल को बढ़ने से रोकने में व्यायाम भी एक महत्वपूर्ण कारक होता है, हमें रोज़ाना खाना खाने के बाद 15-20 मिनट ज़रूर ठहलना चाहिए जिससे हमारा वज़न नियंत्रित व शरीर स्वस्थ रहे कुछ अन्य कारक भी हैं जो कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाते हैं जैसे पारिवारिक इतिहास (फैमिली हिस्ट्री) स्मौकिंग, अल्कोहल और कुछ दवाइयां भी।

कोलेस्ट्रॉल लेवल बहुत ज़्यादा होने से हार्ट अटैक, हार्ट फेल्यूर जैसी धातक बीमारियां भी होने का खतरा बना रहता है, कई बार व्यक्ति के पैरों की धमनियों में कोलेस्ट्रॉल जमा हो जाता है जो कई परेशानियों की वजह बन सकता है इसके लक्षण व्यक्ति को बहुत जल्दी नज़र नहीं आते बल्कि इनका एहसास तब होता है जब कोलेस्ट्रॉल लेवल ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ जाए हाई कोलेस्ट्रॉल होने से आर्टरिस ब्लॉक हो जाती है इससे व्यक्ति को दिल का दौरा तक पड़ सकता है ऐसा तब होता है जब हार्ट सेल्स को ज़रूरी ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है पैरों में कोलेस्ट्रॉल जमा होने की वजह से ऑक्सीजन युक्त ब्लड की आपर्ति ठीक से नहीं हो पाती है जिससे पैरों के नाखून और त्वचा का रंग बदलने लगता है इस स्थिति में त्वचा अक्सर पीली और नसें नीली या बैंगनी रंग की दिखाई देने लगती हैं ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ब्लड ले जाने वाले पोषक तत्वों और आ॒क्सीजन के प्रवाह में कमी के कारण सेल्स को सही पोषण नहीं मिल पाता जिससे त्वचा टाइट हो जाती है और पैर के नाखून मोटे होने के अलावा इनका विकास भी धीमा पड़ जाता है।

व्यक्ति के पैरों की आर्टिरिस ब्लॉक होने व ऑक्सीजन की पहुंच में बाधा आने से पैरों में भारीपन और थकान महसूस होती है। हाई कोलेस्ट्रॉल से पीड़ित अधिकांश लोग निचले अंगों में जलन और दर्द की शिकायत करते हैं ऐसे में व्यक्ति को थोड़ा भी चलने में तकलीफ महसूस होती है। इसके साथ-साथ रात को सोते समय पैरों में ऐंठन होना भी कोलेस्ट्रॉल बढ़ने का एक लक्षण हो सकता है।

हमें क्या खाना चाहिए- ताजी हरी पत्तेदार सब्जियां अपने भोजन में शामिल करना चाहिए जिससे हमें भरपूर मात्रा में विटामिन्स और मिनरल्स भी प्राप्त हो सकें। इसके साथ ही प्रतिदिन खाने के साथ एक प्लेट हरी सलाद खाएं जिससे शरीर में पोषण तो मिले और साथ ही चर्बी ना जमा होने पाए, क्योंकि सलाद में ऐसे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो शरीर में कोलेस्ट्रॉल या कहें वसा/चर्बी को जमा नहीं होने देते हैं। भोजन में सलाद को अनिवार्य करें। साथ ही खाने की शुरुआत में सबसे पहले सादा नमक चखना चाहिए यह भी बहुत फायदेमंद है।

इसके अलावा गिल्की, लौकी, परवल, कट्टू भी फायदा करते हैं विटामिन सी युक्त खट्टे फल हमें अपने आहार में लेना चाहिए जैसे संतरा, मौसंबी, नाशपाती, अंगूर, अमरुद, जामन इत्यादि। इसके अलावा हम पपीता, सेव जैसे फल भी लै सकते हैं। फलों में एंटी ऑक्सिडेंट का गुण पाया जाता है जो हमारे शरीर को बीमारियों से बचाता है जैसे दिल संबंधी बीमारियां, टाइप टू डायबिटीज, कैंसर आदि कुछ फल जिनमें एंटीऑक्सीडेंट्स अच्छी मात्रा में होते हैं जैसे ब्लूवेरीज, स्ट्राबेरी, रसबेरी आदि।

**बिना मलाई का दूध (स्किम्ड मिल्क)-** हमें प्रतिदिन एक गिलास(लगभग 200 मिली) बिना मलाई का दूध पीना चाहिए जिससे हमारे शरीर को ताकत तो मिले ही साथ ही कैल्शियम और अन्य पोषक तत्व भी प्राप्त हो सकें। कुछ व्यक्तियों को दूध का प्रोटीन कैसीन पचता नहीं है तो उनको सोया मिल्क लैना चाहिए, यह उनके लिए पाचक होता है।

लीन मीट- व्यक्ति को हफ्ते में एक बार लीन मीट लेना चाहिए जिससे उसके शरीर में प्रोटीन की कमी ना हो। लीन मीट जैसे चिकन, फिश इत्यादि। इनको फ्राई करने के बजाय भूंज के (रोस्टेड) खाना चाहिए।

अंडा- अंडे में प्रचूर मात्रा में प्रोटीन होता है, परंतु हाई कोलेस्ट्रॉल में व्यक्ति को तले हुए ऑमलेट के बजाय उबले अंडे का सफेद भाग खाना चाहिए जिसमें प्रोटीन पाया जाता है। पीला भाग नहीं खाना चाहिए क्योंकि इसमें फैट होता है।

विचिनोआ, एक आयुर्वेदिक औषधि जो ट्राईग्लिसाइड (टीजी) सीरम को कम करते हुए हृदय संबंधी विकारों के जोखिम को कम करता है, पोटेशियम समृद्ध होने के कारण

दिल की धड़कन को नियंत्रित करता है। अलसी के बीज, दिल के लिए बेहद लाभदायक हैं इसमें ओमेगा-3 फेटी एसिड, प्रोटीन, फाइबर, विटामिन मिनरल्स पाए जाते हैं, ये टाइप 2 डायबिटीज, कैंसर दिल संबंधी बीमारियों के खतरे को कम करने में मददगार हैं। दिन की शुरुआत स्वस्थ नाश्ते से की जाए तो दिनभर ऊर्जा बनी रहती है इसके लिए ओट्स से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता है। क्योंकि ओट्स में फाइबर बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है जो कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में व पाचन शक्ति को बढ़ाने में मददगार है।

चिंया सीडीस को सूपरफूड कहते हैं यह भी फाइबर, मिनरल्स प्रोटीन का बेहतरीन माध्यम है, ये वजन कम करने में, कब्जियत दर करने में कारगर हैं। यह दिल संबंधी व रक्तचाप संबंधी बीमारियों को दूर करता है। सुबह के नाश्ते में दलिया भी बेहतरीन है ज्यादा ताकत देने वाला व कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने वाला, वजन घटाने में। कब्ज दर करने में कारगर होता है। बादाम, अखरोट जैसे सूखे मैवे एलडीएल (बुरा कोलेस्ट्रॉल) को कम करने में मदद करते हैं, हृदय को भी स्वस्थ रखते हैं। लहसून भी कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने व रक्तचाप को कम करने में मददगार होता है।

खाने के तेल में हमें सफोला तेल, ऑलिव ऑईल, राईस ब्रेन ऑईल का उपयोग करना चाहिए ये शरीर में कोलेस्ट्रॉल को जमा नहीं होने देते हैं और एलडीएल को कम करते हैं। ग्रीन टी भी कोलेस्ट्रॉल व एलडीएल को कम करने में सहायक है।

पानी- व्यक्ति को प्रतिदिन भरपूर मात्रा में पानी पीना चाहिए जिससे उसके शरीर का तापमान और रासायनिक क्रियाएं नियंत्रित रहें।

क्या नहीं खाना है- हमें तले हुए भोजन पदार्थ जैसे चिप्स, भजिए नहीं खाना चाहिए बैंकरी प्रोडक्ट्स जैसे पेरस्ट्री, केक, पिझ्झा बर्गर बिस्किट्स आदि नहीं खाना है, अंडे का पीला भाग, मलाई वाला दूध और इससे बनी रबड़ी, आईसक्रीम, पनीर, रेड मीट, पैकड़ फूड ये सब बिल्कुल नहीं खाएं।

कोलेस्ट्रॉल एक साइलेंट किलर है जिसके खतरे का एहसास नहीं होता इसलिए हर छः महीने में अपनी लिपिड प्रोफाईल ज़रूर चैक करवाएं क्योंकि कोलेस्ट्रॉल शरीर में बनता ही रहता है। ध्यान रहे आपका शरीर ही आपकी असल सम्पत्ति है। 'स्वाद की हृद सेहत तक' इसको हमेशा ज़हन में रखें और जितनी भूख हो उतना ही खाएं और जब भूख लगे तब ही खाएं।

# दुपहिया वाहन : देश की धड़कन



परितोष चौधरी  
वरि. लेखापरीक्षक



भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है और विश्व के सभी व्यापारियों का पसंदीदा बाजार भारत रहा है क्योंकि यहां की आबादी और खरीदी करने की क्षमता और विविध त्योहारों के समय गाड़ियाँ/ कार क्रय करना अच्छा शगुन माना जाता है। आधुनिक तकनीकों ने खासतौर से युवाओं के मध्य हमेशा ही महंगी बाईंक खरीदने की चाहत पैदा की है।

अगर हम थोड़े से पुराने वक्त की बात करें तो स्कूटर खरीदना पहले अमीरों की पहचान थी, और “बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर - हमारा बजाज” विज्ञापन लोगों की जबान पर छाया रहता था। बाईंक के नाम पर उस समय हीरो हॉन्डा डबल एस, बहुत ही चुनिंदा लोगों के पास हुआ करती थी, यजदी और यामाहा रखने वालों को बेहद आधुनिक और सम्पन्न माना जाता था, यामाहा आर एक्स 100 की दिल को सुकून देने वाली आवाज हाए.. हाए... उसका तो आज भी कोई सानी नहीं, अब भी कहीं से गुजर जाती है तो लोग मुङ्ग-मुङ्ग के देखते हैं उस समय सुजुकी शाओलीन, शोगन 5 गियर भी बहुत खास रुतबा रखती थी। उस समय अपने बड़े पेट्रोल टैंक, विशालकाय इंजन और दूर तक सुनाई देने वाली इंजन की धक-धक करती आवाज से बुलट बहुत ही खास और समाज में ऊंचा स्थान रखने वालों के पास ही हुआ करती थी और उसका तो एक अलग बाजार हमेशा से ही रहा है जो आज भी क्रायम है।

फिर तकनीक के विकास के साथ 4 स्ट्रोक बाईंक का चलन शुरू हुआ और बदलती पीढ़ी के साथ चार और पांच गियर वाली गाड़ियों ने बाजार में कदम रखा और देखते ही देखते स्कूटर का बाजार फीका पड़ गया। हालांकि एल एम एल वेस्पा भी आधुनिक स्कूटर मानी जाती थी लेकिन उसका बाजार भी आहिस्ता से खत्म हो गया। काइनेटिक हॉन्डा ने तो आग ही लगा दी, वो एक क्रांतिकारी कदम था अपनी अलग शक्ल के कारण वो स्कूटर से बिल्कुल अलग थी और सेल्फ स्टार्ट भी उसकी पहचान थी, कामकाजी महिलाओं की पहली पसंद हुआ करती थी काइनेटिक हॉन्डा। टी वी एस सुजुकी ने बाजार में आमद दी और टू स्ट्रोक इंजन के साथ टक टक टक टक की मधुर ध्वनि उसके इंजन की पहचान थी लाल रंग में आती थी।

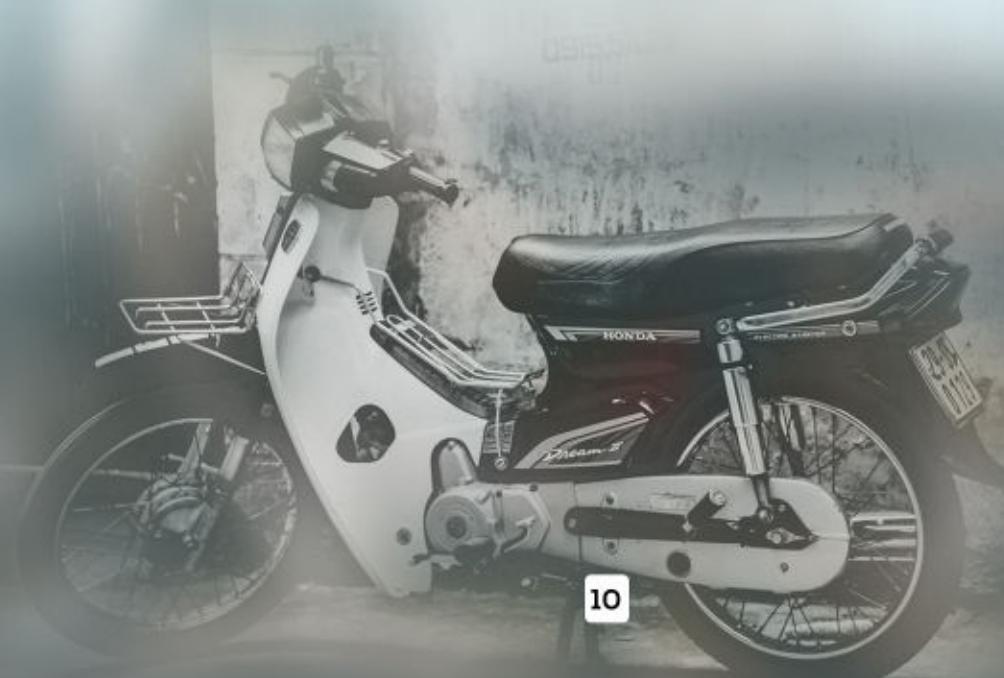
हीरो हॉन्डा ने स्प्लेन्डर बनाकर 2 व्हीलर बाजार में क्रांति ही ला दी और वो हर घर में अपना स्थान बनाने में कामयाब रही। शुरुआत में, गाड़ियों के बाजार में महिलाओं के साथ काफी भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया गया क्योंकि उनके लिए कोई कंपनी सोच ही नहीं रही थी हालांकि बजाज की एम 80, स्ट्राईड, सनी जैसी कुछ चुनिंदा गाड़ियां थीं, लेकिन वो भी सबको सरलता से उपलब्ध नहीं थीं, इनको चलाने वाली लड़कियां किस्मत वाली थीं या बहुत समृद्ध परिवार से उनका नाता था।

साल 1999 में हीरो हॉन्डा ने 5 गियर में 160 सी सी की, सी बी जी उतारकर युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया और जल्द ही सी बी जी युवाओं की पहली पसंद बन गई। आज भी कुछ खुशनसीबों के पास सीबीजी के पुराने मॉडल मिल जाएंगे। इसी के कुछ वर्ष बाद 2001 में बजाज ऑटो ने पल्सर को भारतीय बाज़ार में उतारा और उसका विज्ञापन जो नौजवान युवाओं को अपनी ओर आकर्षित करते हुए 'डेफिनेटली मेल' के ध्येय वाक्य के साथ जब जारी हुआ तो देश की नंबर एक स्पोर्ट्स बाईक का खिताब अपने नाम किया और लोगों में होड़ मच गई और आज भी स्पोर्ट्स बाईक में पल्सर देश की पहली पसंद बनी हुई है। पल्सर 220 ने तो भारतीय बाज़ार में अपनी अलग पहचान बनाई। यहां तक की हीरो हॉन्डा भी इस श्रेणी में कभी उतनी कामयाब नहीं रही।

इस बीच दूसरी कंपनियों ने भी अपनी पहचान बनाने की पुरज़ोर कोशिश जारी रखी लेकिन बजाज और हीरो को कोई भी कभी सीधी टक्कर देने में कामयाब नहीं हुई। टी वी एस ने विक्टर मोटर साईकल उतारी और काफी हद तक बाज़ार पर कब्जा कर लिया लेकिन बाईक की सर्विसिंग के मामले में अक्सर लोग टीवीएस से असंतुष्ट ही नज़र आए और खराब माउथ पब्लिसिटी के कारण टी वी एस बाकियों से पीछे ही रही हालांकि उसकी 'स्पोर्ट्स' ने ग्रामीण लोगों में काफी पैठ बनाई, और एक तरफ़ा राज किया लेकिन कभी भी स्प्लेन्डर का मुकाबला नहीं कर सकी उसकी अपाचे युवाओं को ध्यान में रखकर बनाई गई थी लेकिन शुरुआती कुछ समय के बाद वो अपनी चमक बरकरार रखने में उतनी कामयाब नहीं हुई। बजाज भी कहां पीछे रहने वाली थी, 2006 में उसने एक धमाका किया और बजाज प्लैटिना उतारी बढ़ती

महंगाई के बीच 100+ का माईलेज देने वाली बाईक देखते ही देखते लोगों की पहली पसंद बन गई और आठ महीने में ही बिक्री के नए कीर्तिमान रच दिए। यामाहा अपनी आर एक्स 100, वाली चमक को बरकरार रखने में दोबारा कभी उतनी कामयाब नहीं हुई, लेकिन भारतीय बाज़ार में उसका अपना एक खास रूतबा लोगों में रहा। इस सभी के बीच कुछ विदेशी बाईक कंपनियां भी भारतीय बाज़ार में आती रहीं और महंगी होने के कारण चुनिंदा लोग ही उनको खरीदने में सक्षम हुए। जैसे सुजुकी हायाबुसा, हालें डेविडसन, बी एम डब्ल्यू बाईक्स भी भारतीय सड़कों पर नज़र आई और खूब पहचान बनाई। लेकिन दस सालों में ही हालें डेविडसन को यहां से अलविदा कहने पर मजबूर होना पड़ा हालांकि इसकी एक बड़ी वजह ज्यादा टैक्स को माना गया लेकिन एक बड़ा कारण भारत में कूज़र बाईक को लेकर लोगों के दिल में शंकाओं का होना था और एक आम भारतीय की पहली पसंद कभी भी कूज़र बाईक्स नहीं थी।

हॉन्डा, कावासाकी, दुकाती, बेनेली अपरीला जैसी कंपनियां भी कुछ खास लोगों में मशहूर हुई। इस तरह बदलते वर्ष के साथ भारतीय दो पहिया वाहनों का बाज़ार रौशन होता रहा और देश के सभी वर्ग के लोगों को अपनी पसंद के हिसाब से गाड़ियां खरीदने और जिन्दगी एक सफर है सुहाना गाने का आनंद लेने का मौका मिलता रहा। अब गाड़ियां सिर्फ चलने फिरने का साधन हीं नहीं बल्कि अपने आप में एक स्टेटमेंट हैं। एक पहचान है। लेकिन बढ़ती पेट्रोल की कीमतों से लगता है जल्द ही इलेक्ट्रिक गाड़ियां बाज़ार में अपना राज कायम कर लेंगी... तब तक जिन्दगी के सुहाने सफर का मज़ा लीजिए....





# पागल

कुमार सौरभ  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

तू पागल है, हाँ तू पागल है।  
समाज की बेतरतीब कुप्रथाओं से धायल है।  
इसलिए तू पागल है॥

क्या तुझे मैं आईना दिखा दूँ  
पर बंद आंखों से केवल सपने देखे जाते हैं,  
आईने नहीं देखे जाते॥  
जो तू बंद आंखों से आईना देखना चाहता है,  
इसलिए तू पागल है॥  
तू पागल है, हाँ तू पागल है॥

जिस समाज को आइना बनना था,  
वो ही धुंधला पड़ गया है,  
समाज का हर चेहरा सड़ गया है,  
इसलिए तेरा ज़मीर भी अकेला पड़ गया है।  
जो तू ऐसे ज़मीर के साथ जीना चाहता है।  
इसलिए तू पागल है॥ तू पागल है, हाँ तू पागल है॥



जो किस्मत की बात कहकर आगे बढ़ता है,  
वही तू सबसे बड़ी भूल करता है॥  
किस्मत के बहाने तो बहाने बनाये जाते हैं  
नाकामियों को इसी तरह ही छुपाये जाते हैं।  
जो तू किस्मत के साथे में रहना चाहता है।  
इसलिए तू पागल है॥ तू पागल है, हाँ तू पागल है॥

# अल्पज्ञानी पत्री



अविनाश नाथ  
लेखापरीक्षक

एक गाँव में एक स्त्री थी। उसका पति आई टी कंपनी में काम करता था। वह अपने पति को पत्र लिखना चाहती है पर अल्पज्ञानी होने के कारण उसे यह पता नहीं होता है कि पूर्ण विराम कहाँ लगेगा। इसलिए उसका जहाँ मन करता है वहीं पूर्ण विराम लगाती है और इस प्रकार वह चिट्ठी लिखती है-

‘मेरे प्यारे जीवन साथी मेरा प्रणाम अपने चरणों में। आपने अभी तक चिट्ठी नहीं लिखी मेरी सहेली को। नौकरी मिल गई है हमारी गाय को। बछड़ा हुआ है दादाजी को। शराब शुरू कर दी मैंने, तुमको बहुत खत लिखे पर तुम न आये कुत्ते के बच्चे। भेड़िया खा गया दो महीने का राशन। छुट्टी पर आते वक्त ले आना एक खूबसूरत औरत। मेरी सहेली बन गई है और इस वक्त टी.वी. पर गाना गा रही है हमारी बकरी। बेच दी गई है तुम्हारी माँ। तुमको याद कर रही एक पड़ोसन। हमें बहुत तंग कर रही है तुम्हारी बहन। सिरदर्द से लेटी है तुम्हारी पत्नी।



# नव वर्ष

लो नया वर्ष फिर आया,  
देरों खुशियाँ संग लाया ।  
संकल्प आज हम कर लें,  
उत्साह नया अब छाया ।  
जो वर्ष पुराना बीता  
उसने भी राग है गाया ।  
अच्छी आदतें अपनाए,  
संदेश आज यह आया ।  
सार्थक नव वर्ष मनाएं,  
मास्क और हाथ धोने की  
आदतों के साथ व्यायाम,  
और अच्छा खाना खाने की  
अच्छी आदतें अपनाएं,  
कोरोना महामारी ने समझाया ।



अविनाश नाथ  
लेखापरीक्षक

नव वर्ष



सुभद्रा देवी जी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

# मेरा जीवन एक आग की तरह

मैं चूल्हे के सामने बैठ चमकती आग को देख रहा था। लपटें उठ और गिर रही थीं। वे नीले, नारंगी, पीले और लाल रंगों में जल रही थीं। मैं अपने कमरे से लंबी धूमावदार सड़क देख सकता था। बाहर वाहनों की आवाज सुनी जा सकती थी। बस स्टॉप घर से कुछ ही मीटर की दूरी पर था। मैं हर बस का समय जानता था। मैंने घड़ी का उपयोग करना बंद कर दिया था और दीवार पर रखी घड़ी भी सालों पहले खामोश हो गई थी। मेरा दैनिक कार्य प्रत्येक बस के समय पर निर्भर था। यह एक दूरस्थ स्थान होने के कारण, बसें अक्सर नहीं आती थीं और बस के इंतजार में घर के पास लोग हमेशा खड़े रहते थे।

बगीचे में एक इमली का पेड़ था जिसकी शाखाएँ ज़मीन तक पहुँच रही थीं। इमली तोड़ने के लिए और ज़मीन पर बिखरे हुए फल लेने के लिए स्कूल के बच्चे अंदर आते थे। या केवल इमली के खट्टे पते चबाने के लिए। मुझे बच्चे और उनका खेल देखना पसंद था। अपना सिर उठाए बिना मैं निश्चित रूप से कह सकता था कि घर के सामने से स्कूल बस जा रही थी। शांत वातावरण में अचानक बहुत शोर और हँसी की आवाज। टूटी खिड़की के फलक से हवा बहने से लौ मेरी तरफ बह गई। कमरा

ठंडा था। और बहुत शांत। अंदर की खामोशी में केवल अग्नि की कर्कश ध्वनि और बाहर भयंकर हवा की आवाज सुन सकता था। बगीचे में बहुत लंबे नीलगिरी के पेड़ खड़े थे। एक रात बारिश में एक पेड़ छत पर गिरा और खिड़की का शीशा तोड़ दिया। मैंने नया नहीं लगाया था।

खिड़की तक लम्बी धास बढ़ रही थी। टूटी खिड़की से प्राणी अंदर आते थे। हर रात बारिश होती थी। धूप के दिन और बरसात की रातें।

मुझे कुर्सी पर बैठे हुए कुछ समय बीत चुका था लेकिन आग ने मुझे गर्म नहीं किया। मैंने चूल्हे में कुछ और लकड़ी लगाई। आग बहुत तेज़ी से जलने लगी। कमरे का अंधकार कुछ क्षण के लिए हट गया। लेकिन बारिश में गीली होने के कारण लकड़ी की आग बुझने लगी। अंधेरे में क्षण भर की रोशनी। क्षण भर की खुशी। मैं आगे झुक गया। मैंने अपनी ऊंगली को आग के ऊपर ढौड़ाया और ज्योति को हल्के से छुआ। और फिर से मैं एक बार फिर जिज्ञासु बच्चा बन गया। मेरा जीवन आग की तरह था। कभी-कभी चमकदार लपटों की तरह उज्ज्वल, कभी-कभी चूल्हे की लकड़ी की तरह उदास और अंधेरा। जैसे कि मैंने बैठकर आग की लपटों को देखा, मैंने अपना जीवन अपने सामने जलते हुए देखा।



# पहेलियाँ



अविनाश नाथ  
लेखापरीक्षक

एक महल के दो रखवाले  
दोनों लम्बे दोनों काले,  
ठाकुरों की शान है वह  
मर्दों की जान है वह ।

(मूँछ)

लाल घोड़ा अड़ा है  
काला घोड़ा भागता जाये

(आग - धुआँ)

बच्चे भी कहते हैं मामा,  
बूढ़े भी कहते हैं मामा।  
दीदी भी कहती हैं मामा,  
बोलो कौन से मामा ।

(चन्दा मामा)

ये धनुष है सबको भाता,  
मगर लड़ने के काम ना आता ।

(इन्द्र धनुष)

देखो जादूगर का हाल  
डाले हरा निकाले लाल ।

(पान)

दिन में सोए,  
रात को रोए  
जितना रोए,  
उतना खोए।

(मोमबती)



प्रियंका चौरसिया  
डी ई ओ

# मित्र

घोर अंधकार में आशा की किरण बनकर उभरता जो है,  
वो है मेरा मित्र ।

अन्तः मन की व्यथाओं से बाहर लाता, कभी ना अपने गुणों का बखान करता,  
सरल हृदय सा रहता जो,  
वो है मेरा मित्र ।

यह कोई व्यक्ति विशेष नहीं, मन तन, चेतन से जो उपजता, उल्लासित भरता  
आत्मबल जो.  
वो है मेरा मित्र ।

जो न कभी संवाद करता, न कभी विवाद करता आत्म प्रेरण करता जो,  
वो है मेरा मित्र ।

मेरा होसला, मेरी ताकत, मेरी हिम्मत, एक खुबसूरत अहसास है  
मेरा मित्र ।

आनन्द की पोषित वाटिका से पल्लवित मोहित कुसुम सा खिला रहता जो,  
वो है मेरा मित्र ।

ज्ञान के आलोक में उजास का दिव्य दीपक बन स्वयं जो जलता है,  
वो है मेरा मित्र ।

मेरी मुरुक्कान का चार्जर, भगवान का आशीर्वाद जो है,  
वो है मेरा मित्र ।

जब चलूं बारिश में, वर्षा की बूँदों में आंसू पहचान ले,  
वो है मेरा मित्र ।

इस धरा के हरित वर्ण में, पीत पुष्पों की चादर बिछाता पलाश के फूलों सा  
जो देदीप्यमान रहता है,  
वो है मेरा मित्र ।

धन्य है भारत भूमि जहां मिलती अनेकों मिसालें मित्रों की उनमें सदैव अग्रणी  
रहता जो है, वो मेरा मित्र ॥





## केरल में बाढ़ की तैयारी एवं प्रतिक्रिया पर भा.नि.म.ले.प. की रिपोर्ट, केरल सरकार, वर्ष 2021 का कार्यकारी सारांश

राज्य के कुल भूभाग में से, 14.52 प्रतिशत बाढ़ प्रभावित क्षेत्र के अंतर्गत आता है। भारत मौसम विज्ञान विभाग के आँकड़ों के अनुसार, 01 जून 2018 से 19 अगस्त 2018 तक की अवधि में केरला में 2346.60 मिमी वर्षा हुई जो कि सामान्य से 42 प्रतिशत अधिक थी। 01 से 19 अगस्त 2018 की अवधि में हुई वर्षा सामान्य से 164 प्रतिशत अधिक थी। अगस्त 2018 की अवधि में आई विनाशकारी बाढ़ ने केरल के 14 में से 13 ज़िलों को बुरी तरह से प्रभावित किया जिसके परिणामस्वरूप जान-माल की भारी क्षति हुई।

बाढ़ की वजह से होने वाले नुकसान को कम करने के लिए केरल सरकार की तैयारी एवं प्रतिक्रिया को जाँचने की दृष्टि से 'केरल में बाढ़ की तैयारी एवं प्रतिक्रिया पर' एक निष्पादन लेखापरीक्षा आयोजित की गई थी। निष्पादन लेखापरीक्षा के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित हैं।

## योजना एवं क्षमता निर्माण

केरल राज्य जल नीति 2008 को राष्ट्रीय जल नीति के अनुसार अद्यतन नहीं किया गया था एवं राज्य में बाढ़ नियंत्रण और बाढ़ प्रबंधन संबंधी प्रावधानों का अभाव था।

(पैराग्राफ 2.1)

केरल राज्य जल नीति 2008, जिसमें जल संसाधन विकास के लिए राज्य स्तरीय मास्टर प्लान तैयार करने संबंधी प्रावधान, राज्य की प्रमुख नदियों के लिए मास्टर प्लान तैयार करने एवं नदी बेसिन स्तर में सभी जल संबंधी गतिविधियों के समन्वय के लिए राज्य स्तरीय प्राधिकरण के गठन की आवश्यकता संबंधी प्रावधानों का अनुपालन नहीं किया गया।

(पैराग्राफ 2.2)

राज्य के बाढ़ मैदानों का सीमांकन किए जाने के साथ-साथ बाढ़ के मैदानों के क्षेत्र में कानून बनाया जाना बाकी है।

(पैराग्राफ 2.3)

राज्य में बड़े पैमाने के बाढ़ के खतरे से संबंधित कोई नक्शा उपलब्ध नहीं है; राज्य की आपदा प्रबंधन योजना में बाढ़ संवेदनशील क्षेत्र के लिए केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) के मानदंडों के अनुरूप नहीं होने वाले बाढ़ संवेदनशील मानचित्र शामिल हैं। केरल सरकार के अनुसार, बड़े पैमाने पर नक्शा उपलब्ध करवाने की जिम्मेदारी जल संसाधन मंत्रालय, सीडब्ल्यूसी आदि की है।

(पैराग्राफ 2.4)

त्रिशूर में नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण संस्थान भवन, जो नागरिक सुरक्षा के लिए एक पूर्णकालिक आवासीय प्रशिक्षण संस्थान के समर्पित उद्देश्य को पूरा करने के लिए था, ने पांच वर्ष बीतने के बाद भी अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति नहीं की है।

(पैराग्राफ 2.5.1)

नवंबर 2016 में आपदा मित्र योजना के एमओयू पर हस्ताक्षर के बाद, विभिन्न चरणों में प्रक्रियात्मक देरी के परिणामस्वरूप आपदा मित्र स्वयंसेवकों के पहले बैच के प्रशिक्षण के पूरा होने (अक्टूबर 2018) के एक साल बाद दिसंबर 2019 में आपातकालीन प्रतिक्रिया किट का वितरण हुआ। अगस्त 2019 में राज्य में आई भीषण बाढ़ के बावजूद स्वयंसेवकों द्वारा प्राप्त आपदा प्रतिक्रिया कौशल का उपयोग स्थानीय समुदाय के लाभ के लिए नहीं किया जा सका।

(पैराग्राफ 2.5.3)

## बाढ़ पूर्वानुमान और जलाशय संचालन

आईएमडी द्वारा पेरियार बेसिन में वर्षा अनुमान के लिए 32 मापक (मौजूदा बीआईएस मानदंडों के अनुसार) की आवश्यकता के मुकाबले केवल छह वर्षा मापक उपलब्ध हैं।

(पैराग्राफ3.1)

वर्ष 2017 तक देश भर में सीडब्ल्यूसी द्वारा 275 बाढ़ पूर्वानुमान केंद्र स्थापित किए जाने के बावजूद, राज्य में सीडब्ल्यूसी द्वारा कोई भी बाढ़ पूर्वानुमान केंद्र स्थापित नहीं किया गया था। केरल सरकार ने सीडब्ल्यूसी को जलाशयों/शहरों और कस्बों की सूची नहीं दी थी, जिनमें अंतर्वाह पूर्वानुमान स्टेशनों/स्तर पूर्वानुमान स्टेशनों की स्थापना की आवश्यकता थी। हालांकि, सरकार ने राष्ट्रीय जल विज्ञान परियोजना के तहत एक पूर्ण अंतर्वाह पूर्वानुमान और बाढ़ पूर्व चेतावनी प्रणाली विकसित करने का संकल्प लिया था।

(पैराग्राफ3.3)

वर्षा, धारा प्रवाह आदि पर वास्तविक समय डेटा प्राप्त करने की एक परियोजना पांच वर्षों के अंतराल के बाद भी वास्तविक समय के आधार पर विश्वसनीय डेटा देने में विफल रही।

(पैराग्राफ3.4)

हालांकि आपदा प्रबंधन योजना 2016 में राज्य के आपातकालीन संचालन केंद्र की परिकल्पना की गई थी कि वह एक बौद्धिक निर्णय क्षमता प्रणाली (डीएसएस) के साथ एक पूर्ण अत्याधुनिक आईटी और संचार नेटवर्क से लैस हो, जो प्रमुख जल-मौसम संबंधी खतरों की भविष्यवाणी एवं पूर्व चेतावनी देने में सक्षम होने के साथ ही आपातकालीन स्थिति में सहायता करने में समर्थ हो सके, परंतु, अप्रैल 2019 में पूरा होने की लक्षित तिथि के दो साल बाद भी यह प्रमुख जल-मौसम संबंधी खतरों की भविष्यवाणी करने तथा प्रारंभिक चेतावनी देने हेतु भरोसे के लायक नहीं है क्योंकि इसका प्रभावी कामकाज बाहरी स्रोतों से प्राप्त वास्तविक समय डेटा की प्राप्ति पर निर्भर है, जो अभी उपलब्ध करवाया जाना बाकी है।

(पैराग्राफ3.5.1)

2018 की बाढ़ के दौरान तथा उसके बाद भी बांध स्थलों और सरकारी कार्यालयों सहित कुछ क्षेत्रों में संचार अवसंरचना कार्यशील नहीं थी।

(पैराग्राफ3.5.2)

इडमलयार तथा इटुककी बांधों से मिलाकर, नीलेश्वरम गेज स्टेशन पर 14 से 18 अगस्त 2018 के दौरान जलधारा के प्रवाह में योगदान क्रमशः 46.43 प्रतिशत, 36.12 प्रतिशत, 29.54 प्रतिशत, 23.34 प्रतिशत एवं 16.99 प्रतिशत था। 15 से 18 अगस्त के दौरान मुल्लपेरियार से इटुककी की जलधारा में योगदान 27.93 प्रतिशत एवं 36.62 प्रतिशत था।

2018 की बाढ़ के समय इडमलयार जलाशय में बांध संचालकों के मार्गदर्शन के लिए कोई रूल कर्व नहीं था, 1983 में बनाए गए इटुककी जलाशय के लिए रूल कर्व की समीक्षा 2018 की बाढ़ के बाद तक भी नहीं की गई थी।

14 से 18 अगस्त 2018 के दौरान इटुककी जलाशय संचालन में, रूल कर्व का कड़ाई से पालन किया होता, 558.19 एम सी एम की तुलना में 467.51 एमसीएम की कम फैलाव में परिणित हुआ तो भी इटुककी के संबंध में एक दिन 17 अगस्त 2018 और इडमलयार के संबंध में 2 दिन (16 एवं 17 अगस्त 2018) बर्हिवाह अंतर्वाह से अधिक परिणित हुआ।

(पैराग्राफ3.6)

हालांकि जलाशय संचालन दिशा-निर्देशों के अनुसार जलाशयों की क्षमता का सर्वेक्षण पांच वर्ष में कम से कम एक बार करने की आवश्यकता होती है, 2011 और अगस्त 2019 (जब लेखापरीक्षाकीर्गईथी) के बीच किसी भी केएसईबीएल जलाशयों में कोई क्षमता सर्वेक्षण या अवसादन अध्ययन नहीं किया गया था। हालांकि, 2020 में सात अवसादन अध्ययन किए गए थे।

प्रमुख जलाशयों इटुककी, इदमालयार और शोलायर का अवसादन आकलन पिछली बार क्रमशः 2004, 2011, 1999 और 2003 में किया गया था। बाणासुरसागर बांध के संबंध में, जो 2005 के दौरान चालू किया गया था, अवसादन अध्ययन किया जाना अब भी बाकी है। केएसईबीएल ने बताया है कि 2018 की बाढ़ की पृष्ठभूमि में, बांध पुनर्वास और सुधार परियोजना-॥ में इटुककी, इदमालयार, कक्की, बाणासुरसागर और शोलायर जलाशयों के अवसादन अध्ययन को शामिल किया गया है।

जल संसाधन विभाग के नियंत्रणाधीन जलाशयों के संबंध में, यद्यपि गाद अध्ययन से अरुविक्करा जलाशय (43 प्रतिशत), मंगलम जलाशय (21.98 प्रतिशत), पेप्पारा जलाशय (21.70 प्रतिशत) में गाद के महत्वपूर्ण स्तर का पता चला था, परंतु दिसंबर 2020 में शुरू हुए मंगलम जलाशय के अलावा अन्य सभी में गाद निकालने की गतिविधियाँ अभी तक आरंभ करना बाकी हैं।

(पैराग्राफ3.7)

## भूमि उपयोग और भूमि आवरण में परिवर्तन का प्रभाव

नमूना-जांच किए गए इडुक्की और एर्नाकुलम ज़िलों सहित संपूर्ण पेरियार बेसिन के लिए भूमि उपयोग भूमि आवरण विश्लेषण ने 1985-2015 के दौरान निर्माण किए में लगभग 450 प्रतिशत की वृद्धि और जल निकायों में लगभग 17 प्रतिशत की कमी का खुलासा किया। 2005-2015 के दौरान, निर्माण हुए क्षेत्र में लगभग 139 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यदि 1985 की भूमि उपयोग की स्थिति के अनुसार 2018 में भी समान वर्षा और फैलाव होता, तो नीलेश्वरम गेज स्टेशन पर बाढ़ की गहराई 12.32 मीटर से घटकर 10.03 मीटर हो जाती और बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र 520.04 वर्ग किमी से घटकर 414.76 वर्ग किमी हो जाता।

(पैराग्राफ 4.1)

चेरुतोनी नदी के प्रवाह क्षेत्र में अतिक्रमण की निरंतर उपस्थिति ने नदी के मुक्त प्रवाह को बाधित किया जिसके परिणामस्वरूप 2018 की बाढ़ के दौरान नुकसान हुआ।

(पैराग्राफ 4.2)

हवाई अड्डे के चालू होने और क्षेत्र में गंभीर बाढ़ की घटनाओं के 20 साल बीतने के बावजूद, सिंचाई/ राजस्व और आपदा प्रबंधन स्कंधों/ संबंधित स्था.स्व.शा.सं/ सीआईएल चेंगलथोडु जल को(भारी बाढ़ की स्थिति में) क्षेत्र के समग्र जल विज्ञान को बनाए रखने और निवासी आबादी के लिए नदी के बाढ़ के संभावित जोखिमों को दूर करने के लिए पर्याप्त रूप से बाहरी डायवर्जन नहर के माध्यम से जलधारा को पेरियार नदी में पहुंचाना सुनिश्चित करने में सक्षम नहीं हैं।

(पैराग्राफ 4.3)

तोट्टपल्ली स्पिलवे के प्रमुख चैनल को गहरा और चौड़ा करने के लिए लक्षित ड्रेजिंग से कम, स्पिलवे माउथ के अंदर लगाए गए 500 से अधिक पेड़ों की उपस्थिति के परिणामस्वरूप स्पिलवे क्षमता में कमी आई, जो अगस्त 2018 में आलप्पुऱ्णा में बाढ़ का कारण बना।

(पैराग्राफ 4.4)

## वित्तीय प्रबंधन और सर्वेक्षण

यद्यपि 2018 की बाढ़ में तत्काल मरम्मत एवं क्षति के सुधार हेतु 7124 निर्माणों को राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष के तहत निष्पादन के लिए अनुमोदित किया गया था, 18 प्रतिशत निर्माणों को दो साल आठ महीने (अप्रैल 2021) के बाद भी पूरा किया जाना बाकी था। सरकार ने बताया कि लंबित निर्माणों के मई 2021 तक पूरा होने की उम्मीद है।

(पैराग्राफ 5.2)

# अम्बा



सुश्री काव्या प्रसन्नन,  
सुपुत्री श्रीमती लक्ष्मी एस,  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दो रेखा से शुरू हुई हमारी यात्रा ।  
तेरी अपेक्षा से लंबी थी यथार्थता  
हमेशा मेरी सोच थी तेरे मन में  
खान-पान, दुख, हँसी में ॥  
मेरा मन तो चंचल था, पर उत्तरदायी मैं नहीं,  
पर क्षमा करो, आपकी गोद मेरा था मैदान ॥  
मेरे दिए कष्टों में भी आपने मनाई खुशी ।  
पर मेरे पहले रोने में आप बनाई आंसू भरी हँसी ॥  
धरती तो बिना सीमा की थी मेरे लिए  
पर आपके हाथ लेकर, उसको भी नींव बना दी ॥  
सब कुछ असीमित था, एक जमाने तक ।  
फिर गयी उधर जहां देखे मेरे जैसे अनेक ॥  
क्रंदन - स्पंदन में गई उस दिन ।  
तब तो खड़ा कर ली अपने पांवों पर ॥  
अब जब खड़े आप के साथ, ऐसा लगे ।  
महल तो बनाया आपने ऐंठन से  
मेरे दिए यंत्रणा को खा लिया क्या ?  
कभी कष्ट तो नहीं दी उसे सुनाकर ॥  
आप तो खास है मेरे लिए ॥  
सदा साथ रहती है मेरा ॥  
सांस - धड़कन में थे हम एक साथ ।  
तो अब है सुख, जीत, एकांत में ॥  
हम तो जुड़े हैं न हाथ से ।  
हम हैं जुड़े सजीव रज्जु से ॥

हिंदी में कार्य करने के लिए संघ सरकार की प्रोत्साहन योजना 2020-21 के विजेता प्रमाण-पत्र स्वीकार करते हुए.....



श्रीमती सौम्या पी वी,  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक (ले.प. I)  
प्रथम पुरस्कार



श्रीमती मेरी जया जोस  
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (ले.प.II)  
प्रथम पुरस्कार



श्रीमती राखी पी ओ  
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (ले.प.II)  
द्वितीय पुरस्कार



श्री सायकुमार जे ए  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक (ले.प.II)  
तृतीय पुरस्कार

**हिंदी में कार्य करने के लिए कार्यालयीन प्रोत्साहन योजना 2020-21 के विजेता प्रमाण-पत्र स्वीकार करते हुए.....**



**श्री परितोष चौधरी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक (ले.प. I)  
प्रथम पुरस्कार**

**श्रीमती एलिज़बत मात्यूस  
सहायक पर्यवेक्षक (ले.प. I)  
द्वितीय पुरस्कार**



**श्रीमती जास्मिन ए  
लेखापरीक्षक (ले.प.II)  
प्रथम पुरस्कार**

**आई ए & ए डी इंटर ज़ोनल टूर्नामेंट 2021 - 22  
विजेता - प्रधान महालेखाकारो के कार्यालय, केरल**



**आई ए & ए डी साउथ ज़ोन टूर्नामेंट 2021 - 22  
विजेता - प्रधान महालेखाकारो के कार्यालय, केरल**





## सेटेरिया इटैलिया

जे. ए साईकुमार,  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अन्न परब्रह्मस्वरूप । अन्नदाता सुखीभवः । अन्नलक्ष्मी ।

इस तरह से भोजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अन्न के कई रूप होते हैं और कई वाक्य प्रयोग भी हैं । भारत में अन्न से कई तरह के खाद्य पदार्थ बनते हैं । यह अन्न का वानस्पतिक नाम ‘ओरिज़ा सटीवा’ - है । भारत में ओरिज़ा सटीवा के कृषि का इतिहास उतना पुराना नहीं है । चावल या धान उतना पुराना नहीं है जितना सेटेरिया इटैलिया या फोक्स टेल मिल्लेट । बाजरा या कंगनी के नाम से यह हिंदी में आम रूप से जाना जाता है । कंगनी जो

भारत की सबसे प्राचीन काल की खेती है । आज भी भारत में कंगनी की खेती की जाती है ।

कंगनी का पोषण महत्व बहुत खूब और आश्वर्यजनक है । हृदय की गतिविधि को यह मजबूत बनाता है । इससे प्राप्त होने वाला विटामिन बी 12 का पोषक जो हृदय से संबंधित रोगों को रोकता है । इसमें विटामिन बी1 का भी गुण है और यह अलजाइमर रोग बढ़ने से रोकता है । यह खाद्य मनुष्य की स्मृति शक्ति को बढ़ाता है और दिमागी संतुलन को बनाए रखता है । इसका एंटीऑक्सिटेंड गुण बढ़ती उम्र के साथ आनेवाले धब्बे, झूर्झियां सब कम करता है । शरीर में ‘IRON’ की कमी के कारण थकान, बेचैनी, जोड़ों में दर्द आदि आ सकते हैं । पूरक भोजन जिसमें ‘IRON’ लेना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना अन्य अल्पाहार ।

कंगनी का कुछ परंपरागत उपयोग भी है । अजीर्ण को दूर करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है । मर्दानी जोश के लिए इसे धी के साथ खूब खाया जाता है । प्रजनन मुद्दों के इलाज के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है ।

कंगनी को कैसे पकाना है और किस पदार्थों के साथ यह अधिक स्वादिष्ट लगती है यह भी देखते हैं । इसे आम चावल जैसे पकाकर अन्न के साथ जो सब्जियां खायी जाती हैं जैसे कि चांच, दाल ऐसे व्यंजनों के साथ रुचिदायक होती है । और तो और चीन में इसका नूडल्स भी बनाया जाता है । कुछ लोग इसका आसवन करके बियर जैसे एक तरह का मदिरा भी तैयार करते हैं और इसको अंकुरित करके नमक या बिना नमक के भी खाया जा सकता है । इतना बहुगुणी दाना क्या बाजार में उपलब्ध है ? जी हां जरूर बाजार में मिलता है लेकिन चावल से थोड़ा महंगा पड़ेगा, लेकिन कांगनी पर यह खर्चा प्रत्यावर्तनीय है ।



# आँखों से दूर दिल से दूर



वजह की तलाश में, यू ही वक्त ना गँवाया करें  
बस बेवजह, बेपरवाही से, बेझिझक मुस्कुराया करें

अनिता दास  
कनिष्ठ अनुवादक

दो दोस्त हुआ करते थे – जय और अजय। दोनों के नाम की तरह उनके स्वभाव भी काफी हृद तक एक समान थे। दोनों स्कूल में साथ-साथ पढ़ते थे। दोनों में गहरी मित्रता भी थी। जय उसको अपने प्रत्येक काम में बराबर का हिस्सेदारी भी देता था। अजय को अपने प्रिय मित्र जय पर पूर्ण विश्वास था कि वह उसे धोखा नहीं देगा। हुआ भी कुछ ऐसा ही। लेकिन इतनी समानता के बावजूद जय अजय से थोड़ा चालाकी भी करता था।

दिन गुजरते गए, दोनों की दोस्ती जरा भी कम नहीं हुई। दोनों ने दोस्ती की ऐसी परिभाषा लिख डाली कि लोग दोनों को एक-दूसरे की परछाई तक कहने लगे और कहे भी क्यों ना दोनों हमेशा एक-दूसरे के साथ ही नजर आते थे बिल्कुल परछाई की तरह। दिन-प्रतिदिन दोनों की मित्रता गहरी होती गई। प्रारंभिक पढ़ाई के बाद दोनों ने महाविद्यालय में दाखिला लिया और पूरे तीन साल बाद दोनों ने स्नातक की पढ़ाई पूरी की।

दोनों ने खुशी-खुशी अपने स्नातकोत्तर के लिए विश्वविद्यालय में दाखिला लिया और लगभग दो वर्ष बाद उन्होंने इसकी भी पढ़ाई पूरी कर ली। उसके बाद उनका साक्षात्कार जीवन की व्यावहारिकता से हुआ, जिसमें उन्हें अपने जीवन को सुचारू रूप से संचालन के लिए नौकरी प्राप्त करने की इच्छा हुई। प्रतिस्पर्धा में अच्छे इंसान की असलियत सामने आ ही जाती है। लेकिन दोनों की मित्रता इन इंसानों की इंसानियत से बिल्कुल परे थी। प्रतिस्पर्धा की होड़ उनकी दोस्ती को और गहरा कर दिया और दोनों ने साथ में ही कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण किये। संयोग से दोनों को एक ही विभाग मिला।

इससे पहले जय ने बैंक की परीक्षा उत्तीर्ण किया और वहाँ यानी बैंक में शामिल हो गया। इसके लिए उसे अपना निवास स्थल छोड़कर दिल्ली जाना पड़ा। अजय अकेला हो गया फिर भी उसने अपनी मित्रता को संभाले रखा। दोनों में बातचीत लगभग कम हो गये थे। जय अपने नौकरी पेशा वाले जीवन में व्यस्त हो गया। अजय अपने तरफ से हर संभव प्रयास किया, लेकिन सारे निरर्थक-से हो गये। अजय ने मन ही मन सोचा कि आँखों से दूर दिल से दूर। दूर रहने पर दोस्ती कम हो ही जाती है।

“जो खोया उसका शम नहीं,  
जो पाया वो किसी से कम नहीं,  
जो नहीं मिला वो ख्वाब है,  
जो मिला वो लाजवाब है”

# मानविकी का पुनरुद्धान



सुश्री. मीनाक्षी के एस सुपुत्री जे आर आशा, हिन्दी अधिकारी



यदि आप उच्च माध्यमिक कक्षाओं में मानविकी विषयों का विकल्प चुनने वाले छात्र रहे हैं या उक्त क्षेत्र में उच्च अध्ययन कर रहे हैं, तो शक्तिली निगाहें और खोजबीन वाले सवाल अक्सर आपके सामने आते होंगे। हालांकि, खुद मैंने इन 2 वर्षों में ऐसा कुछ भी महसूस नहीं किया है जबकि मैंने अपनी उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए मानविकी- विधि के अध्ययन को विषयों के विकल्प के रूप में चुना है, शायद इसलिए क्योंकि मेरा परिवार खुले विचारों वाला रहा है जिसने मुझे अपने कैरियर में पसंदीदा रास्ता चुनने की आजादी दी, या हो सकता है कि ये सिर्फ मेरे सामाजिक संपर्कों की कमी के कारण हुआ हो क्योंकि मेरी दसवीं की परीक्षा के खत्म होते ही महामारी की शुरूआत हो गई थी।

“ओह...लेकिन क्या तुम कला के विषयों के साथ एक बेहतर और स्थिर भविष्य बना पाओगी?” अपने विषय के चयन के दौरान मुझे ऐसे ही दकियानुसी सवालों से दो-चार होना पड़ा। ‘दसवीं में तुम्हारे इतने बेहतरीन अंक आए हैं तो क्यों तुम इन विषयों को चुनना चाहती हो’ यह भारतीय समाज में रहने वाले मानविकी के छात्रों द्वारा साझा किया गया एक सार्वभौमिक अनुभव है, जिसने युगों से ‘कला’ को ‘बचे हुए’ छात्रों के विषय के रूप में दर्शाया है। ऐसा विषय जो अवसरों की कमी के कारण केवल अनिश्चित भविष्य की ओर ले जाता है।

आमतौर पर, इनमें से बहुत सी चिंताएँ जायज़ लगती हैं क्योंकि इसमें कोई शक नहीं कि एक स्थिर कैरियर और सामाजिक सुरक्षा, अच्छी ज़िन्दगी जीने के लिए बेहद ज़रूरी है, लेकिन बहुत से लोग किसी मुकाम को हासिल करने के जुनून को पागलपन करार देते हैं और उसे कमतर आंकते हैं, जबकि यही जुनून हमारी आंखों में सपने संजोता है और उन सपनों को हकीकत में बदलने का जोश पैदा करता है बनिस्बत उससे क़दम पीछे खींच लेने के।

टेलिफोन पर, हफ्ते के आखिर में अपनी खास दोस्त से कानूनी मसलों पर चर्चा के दौरान उसके लहजे का उत्साह मैं उसे बिना देखे ही, घर के सदस्यों की बातचीत के अवरोध के बावजूद भी महसूस कर सकती हूं। इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि उसने अपनी किस्मत का फैसला कर लिया है हालांकि वो जानती है कि समाज और पारिवारिक दायित्वों का निभाते हुए, उसे एक लम्बी लड़ाई लड़नी है ये नदी में धारा के विपरीत बहने के समान है। एक "इङ्ग्रिज़ नौकरी और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए, बहुतों को अपने पसंदीदा क्षेत्र को चुनने के सपनों को तिलांजलि देनी पड़ती है और न चाहते हुए भी ज़िन्दगी में साधारण कैरियर को अपनाना पड़ता है। इस सब जद्दोजहद का सामना करते हुए, हम अपने ज़हन से ये सवाल पूछें... कि हमारे पास दोनों क्यों नहीं हो सकते हैं? हमें उद्देश्य और खुशी के साथ एक स्थिर आय वाले रोज़गार और इङ्ग्रिज़ ज़िन्दगी जीने के साथ अपने सपनों को जीने का प्रयास क्यों नहीं करना चाहिए?

क्या केवल विज्ञान या इंजीनियरिंग जैसे विषयों में रुचि लेने वाले ही ज़िन्दगी में सफल हो सकते हैं क्या जीत की इबारत केवल इन्हीं विषयों में लिखी जा सकती है? और सामाजिक विज्ञान में रुचि रखने वालों के लिए सफलता की कोई राह नहीं होती? इन सवालों का जवाब पाने के लिए, हमें यह सोचना चाहिए कि समाज विशेष रूप से भारतीय समाज मानविकी के अध्ययन को कम दर्जे का क्यों मानता है?

बेशक, जैसे-जैसे समय बीत रहा है और हमारा देश आधुनिक और विकसित हो रहा है, मानविकी विषयों की खूबियों के बारे में जागरूकता के साथ ही इन विषयों ने अपना लोहा मनवाया है, लेकिन फिर भी हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपने बच्चों को 'कला' के विषयों का अध्ययन करवाना पसंद नहीं करेगा। उदाहरण के लिए व्यष्ट अर्थशास्त्र या जीव रसायन में डिग्री को फैशन डिजाइनिंग या अंग्रेजी में डिग्री की तुलना में बौद्धिक रूप से बेहतर माना जाता है!



## सब कैसे शुरू हुआ

विज्ञान को श्रेष्ठता पर रखने वाले, इस बौद्धिक पदानुक्रम की शुरुआत का बीज अंग्रेजों ने भारत में अपनी औपनिवेशिक सरकार द्वारा अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली की शुरुआत करके बोया था, जो विज्ञान को शीर्ष स्थान देते हुए कला को निम्नतर के रूप में देखता है। इस प्रणाली ने पश्चिमी सभ्यता और उसके अनूठे औद्योगिक क्षेत्र और विज्ञान एवं तकनीक की तेज़ी से बढ़ती प्रगति को आधुनिकता का पैमाना और क्रांतिकारी क्रदम माना एवं पूर्वी समाज, इसकी कलात्मक और रहस्यमय परंपराओं को पिछड़े तथा असभ्य के रूप में देखा। इसलिए, कई मध्यवर्गीय भारतीय छात्र जिन्हें उनकी खुशकिस्मती से शालेय शिक्षा लेने का मौका मिला उन्होंने "आधुनिक पश्चिमी संस्कृति" को अपनी पलकों पर स्थान दिया। भले ही राष्ट्रवादी आंदोलन ने भारत और उसके इतिहास, कला और संस्कृतियों की फिर से खोज करने का आह्वान किया, विज्ञान की ताज़ा एवं सचित्र दुनिया हमेशा, हमारे लुटे और दबे-कुचले हुए देश को एक मज़बूत शक्ति के रूप में विकसित बनाने के लिए महत्वपूर्ण थी, और ऐसी राजनीतिक अस्थिरता की दशा में, जोकि स्वतंत्रता के बाद का युग था, कला को महत्व देना और हमारे खंडित समाज को मज़बूत करने में इसके महत्व को पहचानने में बदकिस्मती से, किसी का ध्यान नहीं गया।

आर्यभट्ट, भास्कर जैसे महान वैज्ञानिकों और गणितज्ञों के योगदान की बदौलत प्राचीन भारत में विज्ञान और गणित में उपलब्धियों का एक शानदार और जीवंत इतिहास रहा है। इसी के साथ हम, दूर-दराज के इलाकों और अन्य देशों में, भारतीय शिल्पकारों द्वारा बनाए उत्तम गुणवत्ता वाले रेशम, वस्त्र, अलंकृत कढ़ाई कार्य, मूर्तियों आदि के लिए भी अपनी अलग पहचान रखते थे। उदाहरण के लिए, हमारे कश्मीरी "पश्मीना" शॉल रईस विक्टोरियन महिलाओं द्वारा रुतबे, सम्मान और फैशन के प्रतीक के रूप में पहने जाते थे। इसलिए, अगर उपनिवेशवादी भी, जो हमारी संस्कृति को हीन समझते थे उस पर तंज कसने के बावजूद, भी हमसे हमारी कलाओं को छीनने की कोशिश कर सकते थे, तो आज हम इसे स्वेच्छा से अपनी मुट्ठी से क्यों खिसकने दे रहे हैं?

लेकिन मुझे डर है कि अगर हम अपने इतिहास और कला को समान महत्व नहीं देते हैं तो हम दुनिया के एक बेहतरीन सांस्कृतिक खजाने को खोने की राह पर चले जाएंगे।

### **मानविकी का महत्व, गुंजाइश एवं विकास**

यदि मानविकी को और शिक्षा के सभी स्तरों पर, प्राथमिक से उच्च तक, अच्छी तरह से विकसित किया जाए और कैरियर के क्षेत्र से परे उचित महत्व दिया जाए, यह अपनी अपार अप्रयुक्त क्षमता का उपयोग करके राष्ट्र निर्माण में इस तरह का योगदान दे सकता है जो हमारे देश का नाम वैश्विक रूप से रोशन कर सके।

उदाहरण के लिए पर्यटन क्षेत्र में, यह विश्व प्रसिद्ध है कि भारत एक बहुत लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, जो विश्व पर्यटन सूचकांक में 34वें स्थान पर है। संस्कृतियों का हमारा अनूठा समामेलन, समृद्ध ऐतिहासिक गौरव, शानदार स्थापत्य कला की पहचान हमारे प्राचीन पत्थर के मंदिर हैं, जटिल रंगीन नक्काशीदार और हाथों से बने हस्तशिल्प का जीवंत भंडार- यह सब जिज्ञासु विदेशी यात्रियों, इतिहास के शौकीनों के लिए एक आकर्षक पर्यटन स्थल है। कला प्रेमी और भावुक बुद्धिजीवी हमारे सांस्कृतिक चमत्कारों में खुद को समर्पित करने की आरज़ू रखते हैं। फिर भी एक फलते-फूलते पर्यटन उद्योग के लिए और हमारे सकल घरेलू उत्पाद और हमारी विरासत में एक स्थिर योगदान सुनिश्चित करने के लिए, हमारा पर्यटन क्षेत्र आश्चर्य जनक रूप से अविकसित है या उसका विकास सहीं दिशा में नहीं हो पा रहा है।

हमारे ऐतिहासिक स्मारक जो भारत के इतिहास के केंद्र में हैं, उनका रखरखाव अक्सर अच्छी तरह से नहीं किया जाता है, क्योंकि लापरवाह पर्यटक अपने खराब शिष्टाचार और उपद्रवी बच्चों के साथ अपनी सप्ताहांत की छुट्टियों के बाद प्लास्टिक के स्कैप और खाने के पैकेट छोड़ देते हैं और आवारा प्रमी जोड़े इनकी दीवारों पर दिल का आकार बनाकर अपने नाम लिखकर इनकी खूबसूरती को खराब करते हैं। इन ऐतिहासिक इमारतों का नियमित रखरखाव, देखभाल सुनिश्चित करने और बर्बरता के लिए कड़े दंड को लागू करने के अलावा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति को इतिहास के ज्ञान के साथ जोड़ा जा सकता है, विशेष साइट के बारे में कहानियों को बताने के लिए इंटरैक्टिव या रचनात्मक तरीके अपनाकर, समूह या परिवार के लिए व्यक्तिगत या अलग-अलग उम्र में विभाजित किया जा सकता है, चूंकि इन इमारतों के आसपास केवल तथ्यों से संबंधित बोर्ड लगाना पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि अधिकांश लोग पढ़ने की जहमत भी नहीं उठाते हैं।

किसी विरासत स्थल को विकसित करते समय उसकी आधारभूत कहानी के प्रति संवेदनशीलता और सम्मान को अत्यधिक महत्व दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, औपनिवेशिक नीतियों के खिलाफ औपनिवेशिक सरकार के उत्पीड़न के प्रतीक पवित्र स्थान जलियांवाला बाग जो शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों के कुख्यात नरसंहार की जगह है, का हाल ही में जीर्णोद्धार हुआ लेकिन इसका असंवेदनशील ग्लैमराइजेशन इतिहास के क्षरण के रूप में माना गया है। यही कारण है कि इतिहासकारों और ऐतिहासिक वास्तुकारों को इन कारणों से संबंधित मामलों में अधिक बोलने के लिए अधिक उचित स्थान दिया जाना चाहिए।

हमारे पर्यटन क्षेत्र के बारे में एक और गहरा परेशान करने वाला तथ्य यह है कि संरक्षण और सौंदर्यकरण के बीच कुछ निश्चित क्षेत्रों और ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों को दिया जाता है। लेकिन ये केवल वही नहीं हैं जो वैश्विक स्तर पर भारत के प्रोफाइल को सुशोभित करने और पृष्ठभूमि के रूप में स्थापित करने के योग्य हैं। हमारी रोज़मरा की दुनिया, हमारी गलियां, चहल-पहल वाले चौक और बाजार सभी भारत की पहचान के अभिन्न अंग हैं। ये स्थान, जहाँ आज का सामाजिक जीवन फलता-फूलता है, को समान महत्व नहीं दिया जाता है और वे अतिप्रवाहित नालियों, कूड़े से भरे फुटपाथों, जंगली खरपतवारों की विरल वृद्धि और भद्दे थूक के निशान और पोस्टरों से भरे हुए हैं। इसके विपरीत यदि हम एक ठेठ यूरोपीय सड़क पर एक झलक देखते हैं, यहाँ तक कि उनके सबसे छोटे देशों में, तो भी ऐसा लगता है जैसे कि दीवारों पर पेंटिंग की गई है। सदियों पुराने सुंदर घर या सड़क के किनारे पुरानी शैली में निर्मित नए घर, किनारे पर लटके हुए सुंदर फूलों के बक्से के साथ स्ट्रीट लाइट, साफ फुटपाथ और कुल मिलाकर एक बहुत ही आकर्षक जगह। बेशक इसका मतलब यह नहीं है कि भारत को अपनी सड़कों को एम्स्टर्डम लेने के एक सुंदर पोस्टकार्ड की तरह बदलना चाहिए बल्कि इस पर ध्यान देना चाहिए और सबक लेना चाहिए कि हम कैसे खुद को बेहतर बना सकते हैं।

कल्पना कीजिए कि यह कितना सुंदर होगा, अगर भारत की असली पहचान को फिर से हासिल कर लिया जाए, अगर भूलभुलैया की गलियों और गंगा नदी में जाने वाले विशाल घाटों को पुराने दिनों की तरह, इसकी पहचान चंदन की रंगीन इमारतों और सदियों पुराने आकर्षण मंदिरों के शहर के रूप में फिर से संरक्षित किया जाए। पद्मानास्वामी मंदिर और त्रावणकोर शाही परिसरों के परिवेश में केवल वे पारंपरिक "नालुकेट्टू" शैली (चार ब्लॉकों में विभाजित) घर थे और चाला बाजार को इसके पूर्व गौरव के दिनों की याद को भुनाने के लिए फिर से डिज़ाइन किया जाए, तो हम इतिहास में वापस कदम रखने की जादुई भावना को महसूस कर सकते हैं। इतिहासकारों, रचनात्मक वास्तुकारों और कला विशेषज्ञों की अच्छी भागीदारी के साथ ऐसी योजनाओं में निवेश हमारे पर्यटन उद्योग को फिर से जीवंत करने और हमारे देश का अनुभव करने के अन्द्रुत पलों का निर्माण करने में एक लंबा सफर तय कर सकता है।

मानविकी के बारे में हमें स्कूलों में फिर से प्रारंभिक चरणों से शुरूआत करना चाहिए। यह बेहतर होगा कि सामाजिक विज्ञान को इस तरह से पढ़ाया जाए जो कि तारीखों और जटिल नामों को याद रखने के बजाय क्यों और कैसे से संबंधित हो, जिससे कई बच्चे इससे पढ़ने से थकन महसूस न करें। इसका एक बड़ा कारण भारत में प्रोत्साहित रटने की प्रणाली के कारण है जिसे दुर्भाग्य से पिछले कुछ वर्षों में फिर से तैयार किया जा रहा है। पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करते समय मानवतावादी सोच को भी अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। सभी लिंगों, जातियों और वर्गों के लोगों की संबंधित कहानियों का न्यूनतम उचित प्रतिनिधित्व शामिल किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, जैसा कि पहले कहा गया है, महिलाओं की कहानियां और विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान को हमारे इतिहास और विज्ञान की किताबों में बमुश्किल ही जगह मिलती है। अविश्वसनीय लोगों के अस्तित्व का ज्ञान विशेष रूप से एक कम विकसित या वंचित सामाजिक समूह से, एक सामान्य बच्चे के सपने और आत्मविश्वास को प्रेरित या बढ़ावा दे सकता है, उन लोगों को मान्यता प्रदान कर सकता है जो अपने अविश्वसनीय काम के लिए जाने जाते हैं और कुछ सामाजिक वर्गों के बारे में पूर्वाग्रही मिथकों को तोड़ते हैं (यदि मेरे पूर्व भौतिकी के अध्यापक को पाठ्यपुस्तक में कभी के कारण इतिहास में छिपी अनगिनत महिला वैज्ञानिकों के बारे में पता होता, तो वे स्पष्ट रूप से यह नहीं कहते कि महिलाएं विज्ञान के लिए नहीं हैं,)। एक मानवतावादी दिमाग यह भी सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि हमारी पाठ्यपुस्तकों इतिहास की सहीं व्याख्या करे और हम अपने बच्चों को अनजाने में एक ज्ञालिम की कविता को रोमांटिक बनाना नहीं सिखाते रहें। ये छोटे-छोटे विवरण एक सहानुभूतिपूर्ण, सहिष्णु और खुले विचारों वाली पीढ़ी को आगे बढ़ाने में बहुत मदद करते हैं।

पूरी दुनिया तेज़ी से बदल रही है और जीवन को सस्ता, आसान और शांत बनाने के लिए हर देश विकास की दौड़ में है। लेकिन एआई तकनीक और वर्चुअल कनेक्टिविटी की इस तेज़ी से बदलती दुनिया में, हमें ज़मीन से जोड़े रखने के लिए मानवीय स्पर्श अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है। हमारी प्रवृत्ति पर ध्यान न देकर और पृथकी पर हमारे स्थान को महसूस करके अधिक विकास की अंधी दौड़ ने हमें पहले से ही विनाश के मार्ग पर जाने के लिए मजबूर कर दिया है, पर्यावरण की स्थिति को खराब कर दिया है क्योंकि बाढ़ की लहरें और ग्लोबल वार्मिंग की गर्मी हमारे ऊपर विनाश लाती रही हैं, सामाजिक मूल्यों के रूप में सामाजिक विभाजन, साइबर असुरक्षा दोनों के अपराध और बिगड़ते मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि हो रही है। जो चीज़ें हमें एक व्यक्ति के रूप में और समाज के भीतर जोड़ती हैं, उन्हें उसका उचित मूल्य दिया जाना चाहिए और उन्हें पोषित किया जाना चाहिए। डेविड डब्ल्यू ऑर द्वारा निम्नलिखित उद्धरण इस भावना को पूरी तरह से जाहिर करता है कि "सरल तथ्य यह है कि इस धरती को अधिक सफल लोगों की आवश्यकता नहीं है बल्कि इसे और अधिक शांतिदूतों, मरहम लगाने वालों, पुनर्स्थापकों, कहानीकारों और हर तरह के प्रेमियों की सख्त ज़रूरत है।"

# ये दिल मांगे मोर



श्री शाहनवाज़ नज़ीर मोहम्मद  
सहायक पर्यवेक्षक (सेवनिवृत)

बीवी और दो शादीशुदा बेटियां और उनके बच्चे हमारी फैमिली एकदम माशाल्लाह मज़बूत थी, शादी के बाद दोनों बेटियां अपने-अपने शौहर के साथ एक विदेश में और एक बेंगलुरु में बस चुकी थीं, दूर तो थीं.. फिर भी रोज़ाना बातचीत हुआ करती थी और आजकल तो टेक्नोलॉजी इतनी आगे बढ़ गई है कि दूरी कोई समस्या रही ही नहीं। दोनों बेटियों ने हमसे ये वादा लिया था कि रिटायरमेंट के बाद हम दोनों यानि मैं और मेरी पत्नी यहां अकेले नहीं रहेंगे बल्कि बेटियों के साथ वक्त गुजारेंगे, हम दोनों को भी इसमें कोई आपत्ति नहीं थी।

ऑफिस से रिटायरमेंट के कम से कम 3 साल के बाद अचानक व्हाट्सएप में एक मैसेज आया कि तुम्हारा कुछ पैसा क्रेडिट सोसायटी के अकाउंट में अभी भी पड़ा है, सोचा कि चलो ऑफिस भी हो आएंगे और अकाउंट भी क्लोज़ करवा लेंगे और कुछ जान पहचान के लोगों से मिल भी आएंगे। इसी उम्मीद के साथ हम वापस ऑफिस पहुंचे मेन गेट पर जो चौकीदार हुआ करता था, वह भी रिटायर हो गया और नया जो सिक्योरिटी गार्ड और केयरटेकर थे, उन दोनों से हमारी कोई पहचान नहीं थी, फिर भी जैसे तैसे आईडी कार्ड के जरिए अंदर घुस गया। क्रेडिट सोसाइटी में भी एक ही व्यक्ति था, जो हमें पहचानता था वह बोला कि सचिव आज नहीं है कल आईए, मैंने सोचा कि ठीक है, इसी बहाने और एक बार आ जाऊंगा अंदर जाने के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक कार्ड दिया जाएगा उससे एक बेरिकेड खुलेगा फिर अंदर घुस सकते हैं वह जो इलेक्ट्रॉनिक कार्ड है।

उसको गले में डाल के रखना भी है जैसे ही अंदर गया कुछ समझ में नहीं आया... लंबा सा टेबल अगर हम उसे टेबल बुला सकें तो!

पहले जैसी मेज़ और कुर्सियों के बदले बेंच या आईटी कंपनियों जैसा नजारा। एक लंबा सा हॉल था उसके दोनों तरफ लोग बैठकर कंप्यूटर में कुछ काम करते दिख रहे हैं। अंदर गया तो एक पहचाना सा चेहरा दिखा, वह हमारे साथ क्लर्क/टाइपिस्ट था। मगर अब वह ऑफिसर बन चुका था। उन्होंने हमें पहचाना और उनके सामने बैठने को कहा बातचीत तो ऐसे हुई कि वह उनकी तरक्की की बातें कर रहे थे और थोड़ी देर के बाद उनको किसी का फोन आया और वह जैसे कि मुझे भूल ही गए थोड़ी देर में मैं वहां से बाहर निकल गया... माय माइंड वाज़ फ्लडेड विद मेमोरीज़।

हम भी तो इस ऑफिस के इस बदलाव के एक हिस्से थे। हमने भी ऑफिस को इस तरह संभालने के काम पर जुटे थे। हमारे जैसे लोगों की दिन-रात की मेहनत से ही ऑफिस आज जैसा ऑफिस बना है। ऑफिस के बाहर पहुंचते-पहुंचते हमारी आंखें भर आई और सौंचा कि ऐसी तौहीन ऐसी बेइज्जती! भाई हम भी कभी इसी ऑफिस में काम किया करते थे, जो नए रिकूट आए, उनसे मिलते थे, बातचीत करते थे और उनके आने से हम भी खुश हुआ करते थे। बातचीत किया करते थे और उन्हें चाय पर बुलाते थे और खुशी से उनको वापस भेजते थे। भले ही हम कंप्यूटर में माहिर नहीं थे। हम अकाउंट आफिस नहीं देखे मगर इस ऑफिस को इस तरह बनाने के लिए मेरे जैसे बहुत से लोगों ने दिन-रात की मेहनत की है।

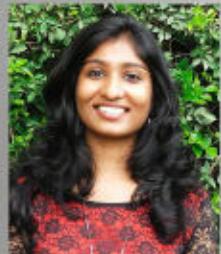
# केकडा



राधिका टी वी  
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

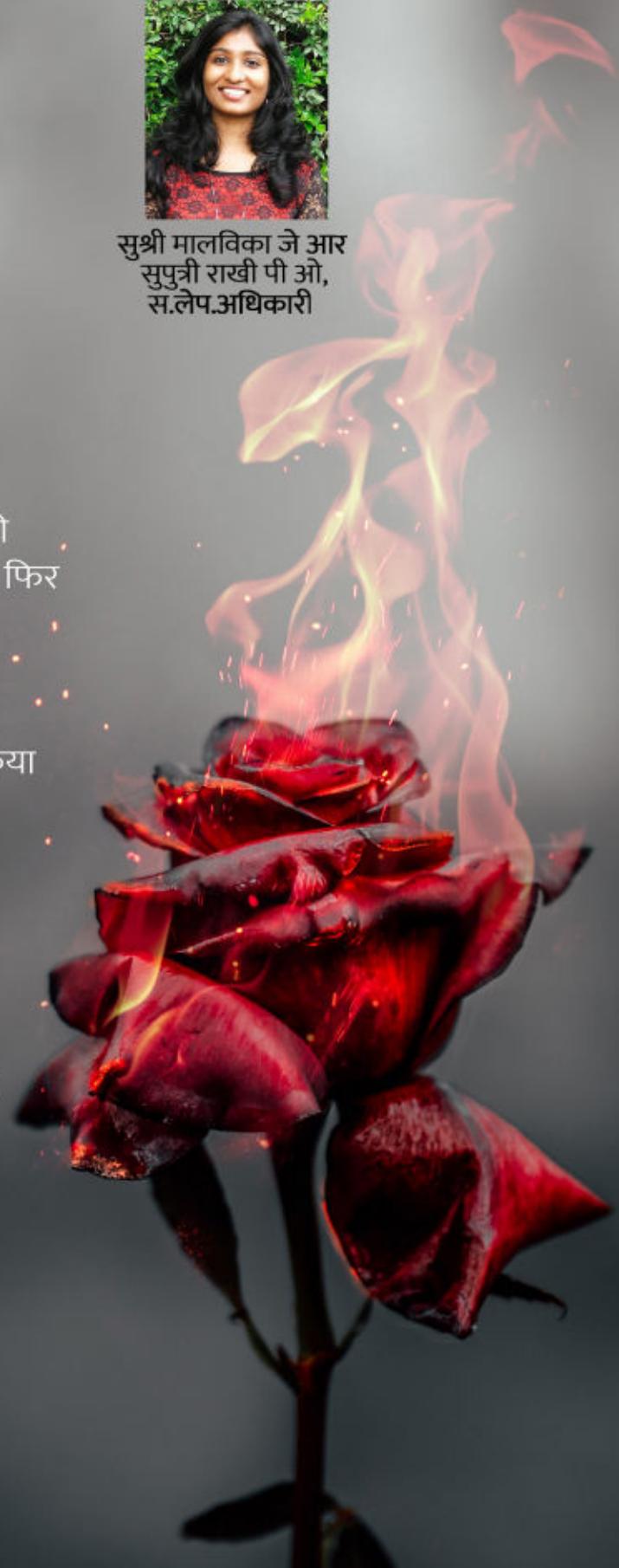
केकडा उस अनचाहे मेहमान की तरह होता है  
जो किसी भी वक्त हमारे जीवन में दाखिला ले सकता है  
कभी एकदम अचानक आता है बड़े प्यार से  
अपने गले से लगाता है और कांधे पर बिठाकर ले जाता है  
वह केकडा कभी हमारे शरीर में रेंगने लगता है...  
और जहां भी रेंगता हो अपनी छाप छोड़ जाता है  
वहां के रक्त को मलिन करता है पुट्ठों को शिथिल करता है  
और कोशिकाओं से अपना पेट भरता है ...  
किसीको खबर दिए बगैर हमारे शरीर में अपना बसेरा बना लेता है  
जाल बिछाता रहता है और एक-एक करके  
सभी अंगों को अपने कब्जे में ले आता है  
हमारे शरीर में वह अपना ध्वज खड़ा करता है ...  
उसका जयारव किसीके भी कान में नहीं गूंजता.....  
धीरे से बहुत धीरे से वह अपना कदम रखता है  
फिर एक क्षण में पूरे बदन को अपने मुह में समा लेता है  
आखिर इंसान... बेबस..लाचार इंसान उसके कदमों पर गिर जाता है  
उसका शरीर अब उसका नहीं ... इस बात से वाकिफ हो जाता है  
गिड-गिडाता है उसके चंगूलों से निकलने की कोशिश करता है  
कोई बच पाता है तो कुछ लोगों को वह जमीन पर रगड़ते हुए  
अपने साथ ले जाता है इस धरती में ही नरक दिखा जाता है .....  
उसकी नियति पहले से ही तय हो जाती है...  
हर एक लम्हे मौत के पैरों की आहट का इंतजार करता है ...  
आखिर क्यों...आखिर क्यों इन केकड़ों के पिंजरे खोलते हैं भगवान...  
उसके नाखूनों को हमारे शरीर में भींचने की अनुमति देते हैं ?

# गिरती कली की आशा



सुश्री मालविका जे आर  
सुपुत्री राखी पी ओ,  
स.लेप.अधिकारी

छोटी बूंदें चमकती रही  
उस पर प्रतिबिंबित किरणों की आशा  
बढ़ने के लिए खुशियों की वो झलक  
वह खूबसुरती से खिलने की प्रतीक्षा की  
फिर तूफान आया उसका सपना चुराने फिर  
बाढ़ ने उसकी जड़ें धो दी  
किरणों की आस अभी भी जिंदा थी  
बिछड़ने से पहले  
वो अपने भाग्य से लड़ने का फैसला किया  
धूप की सँकरी किरण ने उनमें  
उम्मीद जगाई  
उसने न गिरने की बहुत कोशिश की  
फिर वह दिन आया  
वह धरती पर अपनी जड़ें जमा सकती  
वह उम्मीद में बच गई  
सिर्फ इसलिए की उसने हार नहीं मानी  
नहीं कलियों से सुंदर पंखुड़ियाँ  
तक खिल गई ।





श्री अनुराग शुक्ला  
लेखापरीक्षक

# ई-बचपन- एक चुनौती

मनुष्य प्रगति के पथ पर निरंतर चल रहा है, परिणामस्वरूप उसके वातावरण, क्रियाकलाप, दिनचर्या इत्यादि में भी परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया बन गया है। आज के मोबाइल व इंटरनेट के युग ने परिवर्तन की रफ्तार में ईधन का काम किया है और समय का हल्का सा अंतर भी एक पीढ़ी का अंतर जान पड़ता है। तर्क व जिज्ञासा का दायरा इतना व्यापक है कि अब हम अपने बच्चों की जिज्ञासा को 'बिल्ली आ जायेगी' या भूत के भय से कदापि नहीं डिगा सकते। हमें विलुप्त करने में गूगल महाशय की भूमिका जगजाहिर है। अब वे दिन गये जब हर कौतुहल का उत्तर दादी-बाबा या मम्मी-पापा हुआ करते थे। अरे अपना गूगल है ना। सोशल मिडिया व ऑनलाईन गेमिंग के बढ़ते स्वरूप ने तो स्थिति को और भी जटिल व चुनौतीपूर्ण बना दिया है। महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि क्या हम वर्तमान स्थिति के विमुख आत्मसमर्पण कर दें? निश्चित रूप से इसका उत्तर 'न' ही होगा। हमें इस परिवर्तन से निपटने के लिए एक प्रभावी रणनीति बनानी ही होगी।

सर्वविदित है कि वर्तमान में गूगल या इंटरनेट सूचना के महासागर है। हमें यह भी स्वीकारना होगा कि कोई भी वस्तु, आविष्कार, परिवर्तन या विचार सम्पूर्णतः में अच्छा या बुरा नहीं होता। अगर कुछ ऐसा है जो हमारे समय में नहीं हुआ, यह कदापि चिह्नित नहीं करता कि वह व्यर्थ है। इसी प्रकार वर्तमान में गूगल व इसके अन्य स्वरूप वास्तव में हमारे शत्रु नहीं है। समस्या यह है कि यह माध्यम अनियमित व अनियंत्रित है। बच्चों का मस्तिष्क एक स्लेट की भाँति है और उसमें कुछ भी लिखा जा सकता है, अतः युवा अवस्था में सूचना एवं ज्ञान का सुनियोजित एवं नियंत्रित अर्जन अत्यंत आवश्यक है – यही वह बिन्दु है, जिसपर ध्यान देना हमारा उत्तरदायित्व है। अवश्य ही सूचना के मामले में गूगल का स्वरूप व स्थान निर्विवाद है, मगर आपके पास वह है जो इंटरनेट का ज्ञान कभी नहीं दे सकता....??!! जी हाँ!! और यह बहुमूल्य वस्तु है “अनुभव व संवेदना” इसके अलावा गुणवत्तापूर्ण समय जो आपको अपनी व्यस्त दिनचर्या से निकालना ही होगा।



ऑनलाइन गेमिंग के मायाजाल ने युवाओं को वश में कर रखा है और कोविड-19 के दौर में तो इसमें जमकर इजाफा हुआ है। इनके पक्षधर अवश्य यह तर्क देंगे कि यह खेल व्यर्थ नहीं है और इनके द्वारा टीम-बिल्डिंग, संचार कौशल विकसित करने, स्ट्रेटजी बनाने, टार्फिंग स्पीड की दक्षता हासिल करने और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में सहयोग मिलता है। परन्तु जिस सहजता से एक बटन के उपयोग मात्र से वह भयानक हथियार चलाते हैं और जान लेना एवं रक्तरंजित करना महज गुड़े-गुड़ियों का खेल समझते हैं, यह उनके मानसिक विकास के लिये अत्यंत हानिकारक है। मेरा यह निश्चित रूप से मानना है और आप भी जरुर सहमत होंगे कि फुटबॉल, बास्केटबॉल, बेडमिंटन व अन्य फील्ड आदि खेलों का रोमांच किसी ऑनलाइन खेलों से कम बीस ही साबित होगा। मगर प्रश्न अब भी वही है कि इन ऑनलाइन खेलों ने जो चुम्बकीय आकर्षण बनाया है, उससे छुटकारा कैसे पाना है? विश्वास कीजिये यह किला मात्र उपदेश देने, डांट-फटकार या ज्ञान की बातें करने भर से तो बिल्कुल भी नहीं फतह होगा। आपको कार्य और परिवार के बीच समय का तालमेल बनाना ही पड़ेगा। आपका किरदार एक मित्र व मार्गदर्शक का होगा, आपको स्वयं वॉट्सएप यूनिवर्सिटी को अलविदा कह कर मिसाल पेश करनी पड़ेगी। उनका हमराज बनकर उनका मार्गदर्शन करना है, जरुरत पड़ने पर साथ खड़े होकर हौसलावर्धन भी करना है। धीरे-धीरे उनका आकर्षण तैराकी, स्केटिंग, मार्शल आर्ट्स जिस तरफ भी उसकी रुचि हो, मोड़ना है। आवश्यकता पड़ने पर स्वयं उसके साथ प्रातःकालीन दौड़, जिम इत्यादि जाकर उनके लिए रोल मॉडल बनने का काम करना है।

अरे क्या विचार करने लगे आप? यह सब कैसे हो पायेगा? यकीन मानिए महज चिंता करके अगर आप अपनी सकारात्मक ऊर्जा इस और केंद्रित करेंगे, बच्चों के प्रेरणा स्त्रोत बनेंगे, उनके खेलकूद का हिस्सा बनेंगे तो न सिर्फ यह उनके बौद्धिक व मानसिक विकास में सहायक होगा, अपितु उनकी काल्पनिक व यथार्थ के अंतर को समझने की क्षमता भी विकसित करेगा और निश्चित रूप से एक नई ऊर्जा व स्फूर्ती प्रदान करेगा जो उनके पाठ्यक्रम में भी सहायक होगा, एवं बहुमुखी प्रतिभा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इसके अतिरिक्त मैं दावे के साथ यह कह सकता हूं कि आपके स्वयं के ब्लड प्रेशर, शूगर आदि मापदण्डों में एक सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेगा, क्योंकि आप तनाव मुक्त होंगे।

आज की गहन दिनचर्या में यह कार्य आसान नहीं होगा। मगर सवाल हमारे भविष्य का है और उसको उज्ज्वल बनाने के लिए हमें यह चुनौती स्वीकारनी होगी। निश्चित ही संवेदना, समय और मार्गदर्शन से हम एक बेहतर भविष्य और समाज की रचना में सहायक होंगे तो फिर क्या आप इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं?



# बालियां

श्रीमती बिंदु के एन  
सहायक पर्यवेक्षक

भीड़ छट गई । एक-एक करके सभी मुझसे विदा लेने लगे । सभी को मैं सिर हिलाकर यात्रानुमति देने लगा । दक्षिण कोने में अभी भी दादी की चिता जल रही थी । वह अग्निज्वाला दूर आकाश में लीन हो रही थी । मुझे उनकी यादों के अंगार जलाने लगे । दादी की यादें मुझे मिश्री की तरह मीठे अपने बचपन की ओर बहाए ले जा रही थी ..... यह सत्य है या सपना... मैं इतना थक गया था कि दोनों में फरक करने की काबिलियत मुझमें नहीं रही..... उन पुरानी मधुर यादों की ओर मैं मुड़कर देखने लगा .....

बरामदे में खंभे के सहारे बैठी दादी पान तैयार कर रही थी । उनके पूरे दांत झड़ चुके थे । मुंह में पान चबाना संभव नहीं था । इस कारण सुपारी, तंबाकू सब एक साथ कूटकर पान में रखकर, मुख में डालकर चबाते हुए जोर से आवाज़ देने लगी.. चंदू ..... अरे चंदू ..... कहां चला गया?

दादी पुकारती रही । मैं उस वक्त सिंदूरी के पास था उससे बातें कर रहा था । दादी ने फिर पुकारा.... मैं दौड़कर दादी के पास पहुंचा.....मैं इधर हूं दादी..... आपने मुझे बुलाया ?

पान चबाते और थूकते हुए बड़े मजाकिया ढंग से पूछने लगी तू अब तक कहां था ? तेरी कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थी । दादी, मैं सिंदूरी के पास था । ( काले रंग की हमारी गाय के माथे पर सिंदूर के समान एक सफेद निशान था इसीलिए उसे सभी सिंदूरी नाम से पुकारते थे ।) मेरा जवाब सुन दादी ने हामी भरी । दादी जानती है कि मैं हमेशा सिंदूरी के पास रहता हूं । फिर भी मुझे ना पाने पर दादी बार-बार मुझे आवाज देने लगती ।



दादी हर दिन सुबह और शाम मंदिर जाती थी..... जहां तक मुझे याद है एक बार भी उसमें कोई बाधा नहीं आयी है । हर शाम मैं भी दादी के साथ मंदिर जाता था और वहां के तीर्थ में हाथ-मूँह धोकर आरती के बाद हम लौट आते थे । घर लौटते समय रास्ते में दादी मेरे छोटे-छोटे सवालों के जवाब और मेरी शंकाओं का समाधान बड़े प्यार से देती थी ।

सुबह दादी अकेली ही मंदिर जाती थी मुझे नहीं जगाती थी... मुझे आराम से सोने देती.....स्कूल ले जाने केलिए भोजन तैयार करने के बाद ही दादी मुझे जगाती । सुबह उठकर दादी की कुछ मदद करने के बाद ही मैं स्कूल जाया करता था । इतना ही नहीं मैं कुछ समय सिंदूरी के पास जाकर उससे बातें करने के लिए भी निकाल लेता :.... फिर आंगन में कुछ देर खेल-कूद करने के लिए भी... तब दादी मुझसे कहती बस कर अब बाकी उछल-कूद स्कूल से वापस आने के बाद कर लेना । मुझे स्कूल भेजने के बाद घर के बाकी काम काज खत्म कर मेरे वापस आने पर दादी मेरे लिए चाय और नाश्ता तैयार कर मेज पर रख देती.....हाथ पैर धोकर जब मैं चाय पीने बैठता तब दादी भी मेरे पास आकर बैठ जाती । स्कूल की खबरें लेती और प्यार से खिलाती । मुझे प्यार से सहलाती मेरे मां पिताजी के वियोग को लेकर भगवान से रोती-बिलखती शिकायत करती ... कि उन्होंने उन दोनों को इतनी जल्दी क्यों वापस बुला लिया ? अपने झुर्रियों वाले हाथों से मेरे सिर को सहलाते हुए वह रोने लगती । अपना सिर झुकाकर अंगोंचे से आंसू पोछने लगती । फिर भगवान को कोसने लगती । बडबडाते हुए कहने लगती भगवान तूने ऐसा क्यों किया मेरे बच्चों को क्यों बुला लिया.... मुझे और चंदू को क्यों अकेला छोड़ दिया..... फिर प्रार्थना करते हुए कहने लगती....हे भगवान मेरे चंदू को पढ़ाकर उसकी जिन्दगी बन जाने तक मेरी आंखें बंद मत करना ।

मेरे पिताजी विलेज ऑफिस में क्लर्क थे । मेरी मां एक अच्छी गृहिणी थी । दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे । दादी की कहानियों में से मुझे सब कुछ मालूम था । एक बार ओणम की छुट्टियों में हम तीनों गांव आ रहे थे, रास्ते में हमारी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई और मेरे मां-पिताजी दोनों उस दुर्घटना में मारे गए । केवल मैं बच गया । फिर मेरी देखभाल दादी ने अपने कंधों में उठा ली । हमारा खर्चा पिता के तुच्छ पेंशन से और गाय पालकर मिलने वाली आमदनी से होता था । मेरी बदनसीबी की वजह से बुढापे में भी मेरी दादी चैन से जी नहीं पाई । धीरे-धीरे मेरा बचपन बीत गया और मेरी शिक्षा पूर्ण हुई । फिर मैं एक नौकरी की तलाश में लग गया .... आखिर मनपसंद नौकरी मिली तो मद्रास में मिली, खुशी तो हुई लेकिन वहां जाने का खर्च, आवास, भोजन आदि की समस्याओं ने मुझे घेर लिया और खुशी एक ही सेंकड़ में हवा में उड़ गई । इतना पैसा कहां से आएगा .... बहुत सोचने पर भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था । दादी की भी नींद हराम हो गई थी । उनकी चिंता देखकर मैंने दादी से कहा ...यहां पास में ही कहीं नौकरी की कोशिश करना बेहतर है ..... इतनी दूर आप को अकेला छोड़कर जाने की इच्छा मुझे भी नहीं है । यह सुनकर फिर दादी सोच में झूब गयी और फिर मुझे अपने खटिए पर बिठा दिया और अपनी गोद में लिटाकर सिर सहलाते हुए आहें भरने लगी ....मेरी आंखें भर आ गयी इस ममता की छांव में मैं अपना पूरा जीवन खुशी से बिता सकती हूं ... मुझे और कुछ नहीं चाहिए ।

मैं उस हद तक उनसे प्यार करता हूँ। मेरा गांव, यह घर और अपने दोस्त, यहां की मिट्टी की खुशबू, मैं नहीं चाहता यह सब छोड़कर जाऊं लेकिन जाना भी जरूरी है आखिर कब तक दादी पर बोझ बनकर रहूँ। जाने के लिए केवल एक हफ्ता बाकी है उससे पहले बहुत से काम निपटाना पड़ेगा। दादी के साथ रहने के लिए वनजा बुआ को आने को कहना होगा। हर दिन दादी मेरे जाने के बारे में कई सवाल करती....अब तुझे जाने के लिए कितने दिन रह गए हैं.... कुछ भी तय नहीं होने के कारण मैं दादी को सीधे मूँह जवाब नहीं देता.... मैं जानता हूँ मेरी इस आदत से दादी को बहुत ज्यादा दुख पहुँचाया होगा। एक दिन दोपहर को दादी ने एक पुढ़िया मुझे थमा दिया और कहा इसे खोलकर देखो बेटा तुम्हें जाने के लिए क्या इतने रुपए काफी है? एक पल के लिए मेरा होश उठ गया। इतने रुपए दादी को आखिर मिले कहां से .... क्या किसी से उधार लिए .... मैंने आश्वर्य से पूछा लेकिन दादी ने कोई जवाब नहीं दिया केवल हंसती रही और बोली तुम बस नौकरी करने जाओ.. यही मैं भी चाहती हूँ और किसी चीज के बारे में मत सोचो ।

रात को भोजन के लिए बैठा तो मैंने देखा कि दादी की सोने की बालियां गायब थीं। मुशकिलातों की घड़ियों में भी दादी ने पंचरत्न जड़ी उस सोने की बालियां कभी उतारी नहीं थी.. वे बालियां उनके चेहरे पर चार चांद लगाती थीं। एक बार दादी ने कहा भी था कि बचपन में वे अपनी मां के साथ ननिहाल गयी तब उनकी नानी ने ही उन्हें यह बालियां तोटफे में दी थीं। इतनी सुंदर बालियां मैंने आज तक नहीं देखी। दादी मजाक में कहती थी कि अपने गुजर जाने तक यह बालियां दूर नहीं होने दूँगी ।

जान की तरह दिल से लगाए रखने वाली, वह बालियां दादी ने मेरे लिए बेच दी ... यह विचार मेरे दिल को निचोटने लगा। मेरे भविष्य के लिए अपने हाथ की एक मात्र संपत्ति को दादी ने नष्ट कर दी ..... मैं दादी के पैरों पर पड़ गया और बिलखकर उनके पैरों को चूमने लगा। दादी ने धीरे से मुझे उठा लिया और मेरे माथे को चूमते हुए कहा कि बेटा तुम्हें यह नौकरी मिले तभी मेरे मन को शांति मिलेगी। मेरे बारे में सोचकर तुम दुखी मत होना..... तुम्हारी तो जिंदगी अभी शुरू ही हुई है कब तक मैं तुम्हारी साथ देती रहूँगी ।

आखिर ऐसे मेरा मद्रास जाना तय हुआ। जाने के एक दिन पहले दादी ने मेरे लिए अचार, सिर में लगाने का तेल आदि तैयार कर, मेरे बैग में रख दिया, दो तीन जोड़ी अच्छे कपड़े भी रख दिए। घर से यात्रा आरंभ करते समय मैंने दादी के पैरों को छूकर आशीर्वाद लिया और धीरे से दादी के कानों में कहा वापस आते वक्त दादी के लिए बालियां खरीद कर लाऊंगा। दादी के आंखों से खुशी की आंसू बहने लगी। मैं दादी से विदा लेकर आगे बढ़ने लगा। आंगन तक दादी और बुआ मेरे साथ आए। इस प्रकार मैंने अपने लंबे समय के सपने को साकार कर लिया।

नई नौकरी मुझे बहुत पसंद आई। उस दिन शाम को नौकरी से वापस घर आकर मैंने दादी को खत लिखा। कुछ दिनों के पश्चात दादी का जवाब भी मुझे मिला... बड़ी जिज्ञासा से मैंने वह पत्र को पढ़ा था गांव के सभी हाल-चाल दादी ने पत्र में लिखा था। हर पत्र के अंत में दादी पूछती कि बेटा तुम कब गांव आओगे? किसी वजह से छुट्टी भी नहीं मिल रही थी। आखिरकार आज मेरी छुट्टी मंजूर हो गयी। तुरंत ही मैंने दादी को खत लिख कर बता दिया कि अगले महीने 10 तारीख को मैं गांव आऊंगा.. मुझे जब पहले महीने का वेतन मिला तभी मैंने दादी के लिए पुरानी वाली बालियों के समान एक जोड़ी नई बालियां खरीदकर रख ली थीं। मेरे आने की खबर सुनकर दादी बहुत खुश थी और बेसब्री से मेरे आने का इंतजार कर रही थी .... मैंने दादी

की बालियां और उनके लिए जो नए कपड़े खरीदे थे, वो पहले ही बैग में रख लिए थे। मुझे कैसे भी घर पहुंचना था और दादी को यह सब पहने हुए देखना था। आनंद और गर्व से रही छाती फूल रही था। दादी से मिलने की ख्वाहिश, इतने दिनों के बाद मुझे देखकर उनके चेहरे के हाव-भाव और उन आंखों की चमक ...सब जीवंत चित्र बनकर मेरे आंखों के सामने धूमने लगे।

गांव से वापस आने पर दादी को भी साथ लाऊंगा ... बाकी की जिंदगी दादी मेरे साथ सुरक्षित और आत्मसंतुष्ट हो कर रहेगी... ये सब सोचकर थोड़ी आंखें मूँद गयी। आंखें खुली तो मैं गांव पहुंच गया था। बस से उत्तरकर बड़े उत्साह से घर की ओर बढ़ रहा था। दूर से ही घर दिखाई दे रहा था। घर के बाहर और आसपास बड़ी भीड़ लम्ही हुई थी। सभी बड़े दीनता से मुझे देख रहे थे और मुझे जाने के लिए रास्ता दे रहे थे। कोई कुछ नहीं कह रहा था। मैं सीढ़ियां चढ़कर आंगन में पहुंचा तो दीपक जलाकर दहलीज पर केले के पत्ते पर और दादी को नए कपड़े पहनाकर लिटाया था। हे भगवान ! मेरे आंखों को यकीन नहीं हो रहा ..... आंखों के आगे अंधकार छा गया ..... क्या मेरी दादी नहीं रही....मैंने सोचा था कि दादी मुस्कुराती हुई दहलीज पर मेरा इंतजार कर रही होगी और अभी मैं क्या देख रहा हूँ। कोई बता रहा था कि कल रात नींद में ही दादी चल बसी थी।

आज मेरा पोता आ रहा है.... ऐसा कल शाम को मंदिर से लौटते समय रास्ते में सभी से बड़ी खुशी के साथ कह रही थी। मेरे हाथ पैर ठंडे हो रहे थे...आंखों में अंधेरा छा रहा था.. मेरा होश गुम हो गया...किसी ने मेरे सिर पर पानी डाला और मुझे नहलाया। देह शुद्धि के पश्चात् मुझे चिता के पास ले जाकर बिठा दिया गया और मंत्र जपने लगे मैं यांत्रिक रूप से दोहराता रहा। चिता को अग्नि देकर मैं वापस घर आ गया।

बरामदे में मैं बैठा रहा कितनी देर बैठा रहा... वक्त का कोई पता नहीं। जब मैंने होश संभाला तो वनजा बुआ और मेरे कुछ रिश्तेदार ही रह गए थे।

रात होने लगी रिश्तेदार सोने की तैयारी कर रहे थे। सुबह से ही सभी दुख से भरे माहौल में झूंके हुए थे। दिन भर के दुख से मांदे हुए थे। केवल वनजा बुआ कुछ विचारों में झूंबी हुई बैठी थी। बीच-बीच में दीर्घ निश्चास ले रही थी। बेचारी बुआ अब अकेली हो गई.....हमेशा दादी की छाया में पलने वाली बुआ बहुत उदास दिखाई दे रही थी। किसी ने भी भोजन अब तक नहीं किया था बुआ ने मुझे खाने को कहा ....भूख नहीं है ऐसा मैंने जवाब दिया.. सुनकर बुआ दहलीज का दरवाजा बंदकर सोने गयी। कितनी ही देर करवटें बदल कर बिस्तर पर पड़ा रहा। चारों और निशब्दता छाई थी। नींद नहीं आ रही थी। धीरे से उठकर मैं दहलीज पर जाकर बैठ गया।

दादी के पान लगाने की पेटी यथा स्थान रखी हुई थी। कुछ देर मैं उसको देखता रहा। मुझे ऐसा लग रहा था कि दादी अब भी वहां बैठी है। मैं आंगन में उत्तरा। दादी की चिता से धुआ अभी भी उठ रहा था और वातावरण में फैल रहा था। ऐसा लग रहा था मानो इस धरती को छोड़ने से इंकार कर रहा हो।

अब बस यादें ही रह गयी हैं। क्या-क्या सपने लेकर मैं यहां आया था ... सब बेकार हो गए। अचानक मुझे दादी के लिए खरीदी बालियां और नए कपड़े याद आए। जल्द से मैं घर के अंदर पहुंचा वो सब उठाकर अपने सीने से लगा लिया और दादी के चिता की ओर धीरे धीरे बढ़ने लगा। सारी दुनिया गहरी नींद में थी। मैं आंगन में आगे बढ़ रहा था तब सिंदूरी ने धीरे से रंभाया। ऐसा लगा कि दादी की जुदाई वह भी संभाल नहीं पा रही थी। मैं उसके पास पहुंचकर उसे सहलाने लगा। दादी के वियोग से हम दोनों समान रूप से दुखी थे। मैंने महसूस किया कि उसके आंखों से आंसू आ रहे थे। हालांकि बोलने की क्षमता उसमें नहीं थी फिर भी वह अपना चेहरा मेरे हाथों पर रगड़ रही थी। वहां से मैं जल्दी दादी के चिता के पास पहुंचा। अभी भी उसमें आग जल रही थी। काफी देर मैं वहां खड़ा रहा। दादी के लिए खरीदे नए कपड़ों के ऊपर बालियां रख चिता के समक्ष प्रणाम कर मैं काफी देर रोता रहा। दादी की आत्म शांति के लिए प्रार्थना करता रहा। वापस लौटते समय मन भारी था .... अब वह प्यार मेरे नसीब में नहीं रहा।

आकाश पर तारों के समूह से एक चांदी का तारा प्यार और ममता से मुझे देखकर मुस्कुराने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे दादी की झुर्रियों वाली उंगलियां मुझे सहला रही थी। पूर्व से सूर्योदय की लाल किरणें दिखाई देने लगी। चिडियां अपने मधुर स्वर में गीत गाते हुए प्रातःकाल का स्वागत कर रही थीं। उस स्वर्णम प्रभा में दादी की पंचरत्न बालियां चारों ओर प्रकाश फैला रही थीं।





## भारत के विकास में महिलाओं की भूमिका

सुश्री अपर्णा सरस्वती,  
सुपुत्री श्री वी चुरेष,  
स.लेप.अधिकारी

वैदिक काल में ही नारी को देवी का दर्जा दिया गया है। मनुस्मृति में नारी के संबंध में एक उक्ति मिलती है- ‘यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता’। इसका अर्थ है ‘जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का निवास रहता है।’ इस कथन का मूल मंतव्य है- समाज को नारी का आदर करने के लिए प्रेरणा देना, क्योंकि जहाँ नारी का आदर-सम्मान किया जाता है, वहाँ सुख, समृद्धि और शांति रहती है। स्त्री और पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं, अगर एक छोटा या अनुपस्थित हो जायेगा तो गाड़ी ठीक से चल नहीं पायेगी।

महिलाओं ने सदियों पुरानी भारतीय समाज को भी बदलने का प्रयास किया। वैदिक काल में सीता, पार्वती, द्रौपदी, अहिल्या और अन्य नारियां हमारे लिए आदर्श बन गई, क्योंकि उनके बलिदान और सद्गुण महान थे। मध्यकालीन भारत में मीराबाई, चाँदी बीबी, रजिया सुल्तान, पद्मिनी, नूरजहाँ, मुमताज महल, जीजाबाई और पन्ना थाय अग्रणी महिलाएं थीं, जिन्होंने भारत के सामाजिक और राजनैतिक प्रगति में अपना सक्रिय योगदान दिया। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज को अपने सद्गुणों और कार्यकलापों के द्वारा परिवर्तित करने का प्रत्यन किया और काफी हद तक सफल भी हुए।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम के गौरवशाली दिनों में भी महिलाओं ने अपना योगदान दिया। इनमें भीकाजी कामा, अरुणा आसफ अली, सरोजनी नायडू, एनी बेसेन्ट, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल और कस्तूरबा गाँधी शामिल थीं। उन्होंने भारतीय जन साधारण को सामाजिक स्तरों पर प्रबुद्ध करने की चेष्टाएं की। इनमें से कुछ नारियों ने उस समय प्रचलित कुप्रथाओं जैसे सती, बाल विवाह आदि का विरोध करने के साथ-साथ नारियों को शिक्षा दिलाने के लिए भी अनेक प्रयत्न किये। तब से लेकर आज तक भारतीय महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती आ रही हैं, जैसे राष्ट्र-निर्माण, समाज का सशक्तिकरण, यहाँ तक कि देश को विकास के पथ पर लाने का भी नेतृत्व और उत्तरदायित्व भारतीय नारी ले रही है।

आज की भारतीय नारी ने कई बार महत्वपूर्ण पद पाए हैं और अपने भूमिका को अत्यंत उत्कृष्टता के साथ निभाई है। वर्तमान में कई नारियों ने जन साधारण की दशा सुधारने के लिए कठिन परिश्रम किया है। इसमें इन्दिरा गाँधी, पी टी उषा, कर्णम मल्लेश्वरी, शबाना आज़मी, जस्टिस फातिमा बीबी जैसे कई महिलाओं का योगदान अनमोल है। भारतीय नारियों ने राजनीति, खेलकूद, सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा, साहित्य, सिनेमा आदि कई क्षेत्रों में अपना नाम अंकित की हैं और एक आधुनिक समाज की स्थापना करने हेतु कठिन परिश्रम की हैं।

यह दुख का विषय है कि जिस भारत के कुछ नारियों को विश्व के अन्य सभी देश सम्मान कर रहे हैं, उसी भारत में कई स्त्रियाँ ऐसे भी हैं, जिन्हें शिक्षा तक प्राप्त नहीं हो रहा है। आज भी हमारे देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक मंचों पर महिलाओं को पूर्णरूप से भाग लेने के अवसर नहीं दिये जा रहे हैं। हमारे समाज में लिंग-भेद अभी भी कायम है। अभी भी भारत के कई भागों में लोग लड़की को बोझ और अभिशाप मानते हैं और अपने ही घरों में उनके साथ पक्षपात और दुर्व्यवहार होता है। हमारा देश अभी भी अन्धकारपूर्ण युग से पूरी तरह बाहर नहीं निकला है।

समाज में नारियों की समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करने से पूर्व पुरुषों को उन्हें अपने दर्जे पर स्वीकारना होगा। नारी को भोग-विलास तथा शोषण की वस्तु न मानकर उसे बराबर का सम्मान तथा मौका देना होगा। भारतीय समाज को यह बात नहीं भूलना चाहिए कि ‘एक नारी माता भी है’। उसके माता के रूप में दर्जा भगवान से भी ऊँचा है।



# मेरी आशा

श्री जोश्वा जॉन  
सुपुत्र श्रीमती उषा बर्टी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पक्षी जैसे नील गगन में  
उड़ना है मुझे बेफिक्र  
शेर जैसे खुले जंगल में  
सैर करना है बिना किसी डर के

नदी जैसे धाटी-चट्टानों में से  
बहना है मुझे उछल-कूदकर  
नया रास्ता ढूँढना है मुझे  
नज़ारों का आनंद लेते हुए

वृक्ष जैसे कड़ी धूप में  
खड़ा रहना है मुझे शान से  
मस्त हवा की लहरों को चूमकर  
फूलना है फलना है हर मौसम में

# यादों की कहानी



सुश्री मैथिली जे आर  
सुपुत्री राखी पी ओ,  
स.लेप.अधिकारी

हर पल तेरी यादों में मर रही हूँ मैं  
जब तुम चले गये  
तेरी यादें रह गई  
हमारे पास जो पल थे  
वो बहुत खूबसुरत थे  
तेरे बिना जीना अधूरा है ।  
जो वक्त बीत चुकी है  
वो सब एक बार वापस आने दो  
तुम मेरी खुशी हो  
मैं आपके वादे में जी रहा था  
लेकिन अब वादे टूट गये  
और मैं यहाँ अकेली  
तेरी मुस्कान की झलक  
मुझे हर बार प्यार का एहसास दिलाया  
और अब तेरा अनदेखा  
मेरा दिल टूटता है  
फिर भी तेरा इंतजार करूँगी मैं ॥



हिंदी में सर्वाधिक कार्य किए अनुभागों के लिए रॉलिंग ट्रॉफी प्रधान महालेखाकार  
महोदया श्रीमती अनिम चेरियान से स्वीकार करती हुई श्रीमती हेमा सी.वी, वरिष्ठ  
लेखापरीक्षा अधिकारी, का.स्था. हकदारी अनुभाग

लेखापरीक्षा ।



प्रधान महालेखाकार महोदय श्री को.प. आनंद से रॉलिंग ट्रॉफी स्वीकार करते हुए श्री  
के वी सुरेष कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, का.स्था.रोकड अनुभाग

लेखापरीक्षा ॥



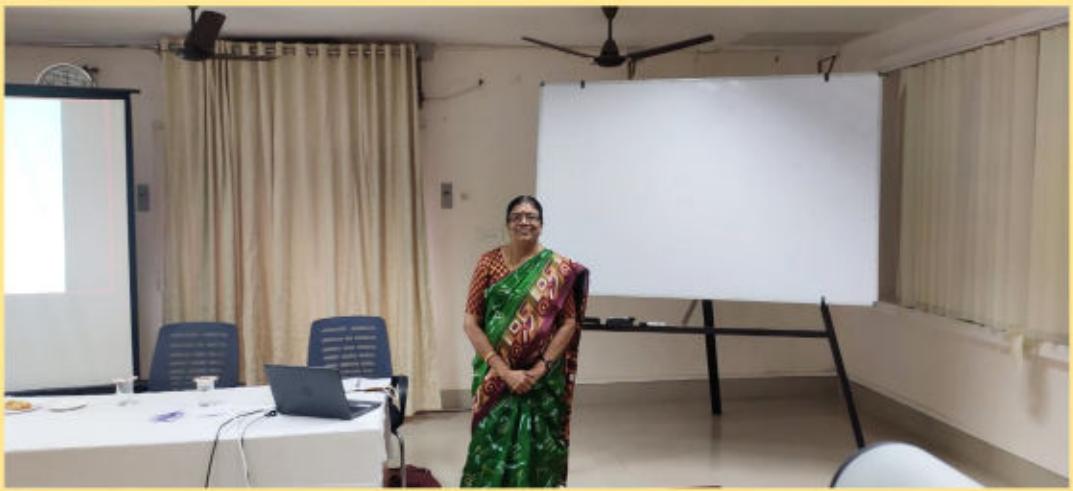
तिरुवनन्तपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से वर्ष 2019-20 केलिए संयुक्त हिन्दी गृह पत्रिका 'सविता' केलिए सर्वोत्तम पत्रिका पुरस्कार के साथ प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)। साथ है दोनों कार्यालयों के वरिष्ठ उप महालेखाकार गण एवं हिन्दी अधिकारी गण



तिरुवनन्तपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से वर्ष 2019-20 केलिए प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) कार्यालय, केरल को प्राप्त राजभाषा वैजयंती - द्वितीय पुरस्कार (त्रेणी III) के साथ प्रधान महालेखाकार, वरिष्ठ उप महालेखाकार गण एवं हिन्दी अधिकारी



प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक, लेखापरीक्षा I एवं लेखापरीक्षा II)  
कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'कार्यस्थल पर महिलाओं के  
उत्पीड़न पर जागरूकता कार्यक्रम' में भाग लेते हुए अधिकारीगण





केरल विश्वविद्यालय से बीएससी  
स्टाटिस्टिक्स (सांख्यिकी)  
में प्रथम रैंक प्राप्त सुश्री नेहा सारा जोसफ  
सुपुत्री श्री जोसफ सेबास्टेन,  
व. लेखापरीक्षा अधिकारी



जिमी जॉर्ज इन्डोर स्टेडियम में 25 से 28 नवम्बर 2021 तक<sup>1</sup>  
आयोजित केरला राज्य टेबल-टेनिस चैम्पियनशिप 2021 में उपविजेता श्री  
सेंथिल राजेन्द्रन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं  
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय  
केरल, तिरुवनन्तपुरम